संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२६ ● : संयुक्तांक १६ एवं १७ ● १८ एवं २५ अप्रैल २०२४ (गुरुवार) बैशास कृष्णपक्ष द्वितीया सम्वत् २०८१ ● दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२५

श्री राम नवमी पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का आदर्श एवं प्रेरणादायक जीवन

-मनमोहन कुमार आर्य

आर्यावर्त वा भारतवर्ष में प्राचीन काल से अध्यात्म का प्रभाव रहा है। सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने चार ऋषियों के माध्यम से वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे उन ऋषियों व बाद में ऋषि परम्परा ने इस ज्ञान को सुरक्षित रखा जिस कारण आज भी वेदों की संहितायें व वेदों का सम्पूर्ण ज्ञान सर्वसाधारण के लिये सुलभ है। यह बात और है कि कौन उससे लाभ उठाता है या नहीं। महाभारत काल के बाद वेदों में अनेक प्रकार की विकृतियां आ गईं थी। इसी कारण समाज में भी विकृतियां फैल गईं और वैदिक धर्मी लोग धर्म के मर्म को भूल कर पांखण्डी और अन्धविश्वासी बन गये। इसका परिणाम भारत में छोटे छोटे राज्य बने, सामाजिक विकृतियां उत्पन्न हुई तथा धर्म में सत्याचार के स्थान पर अज्ञान पर आधारित मिथ्याचार व स्वार्थ आदि की परम्पराओं में वृद्धि हुईं। ऐसे समय में बाल्मीकि रामायण में भी प्रक्षेप हुए। रामायण वा राम के सम्बन्ध में अनेक मिथ्या किम्वदन्तियां प्रचलित हुईं और अवतारवाद आदि सम्बन्धी अनेक अविश्वसीय कथाओं को भी रामायण में जोड़ दिया गया। महात्मा बुद्ध के बाद व कुछ शताब्दी पूर्व भारत में पुराणों की रचना हुई जिसमें ज्ञान व विज्ञान की उपेक्षा कर अनेक अज्ञान से युक्त बातों का प्रचार हुआ। रामायण का कुछ प्रभाव भी भारतीयों में रहा। यवनों की पराधीनता के काल में तुलसीदास जी उत्पन्न हुए जिन्होंने लोक-भाषा अवधी व हिन्दी में काव्यमय रामचरित मानस की रचना की। इससे पूर्व धर्म व मत सम्बन्धी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में थे। राम-चरित- मानस के लोक भाषा में होने के कारण इसका जन-जन में प्रचार हुआ। इसका कारण मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उज्जवल प्रेरणादायक चरित्र था। यदि कोई मनुष्य राम का जीवन चरित जान ले और उसके अनुसार आचरण करे तो वह मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार की सफलताओं को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने सभी शास्त्रीय एवं इतिहास ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने पुराणों की परीक्षा भी की थी। ऋषि दयानन्द ने पाया कि रामचन्द्र जी का जीवन वैदिक मान्यताओं के आधार पर व्यतीत हुआ था। एक क्षत्रिय राजा व राजकुमार का जीवन जैसा होना चाहिये वैसा ही आदर्श एवं मर्यादाओं में बन्धा हआ जीवन रामचन्द्र जी का था। अतः ऋषि दयानन्द ने वेदों को जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से अखिल-धर्म का मूल हैं, उसका

प्रचार-प्रसार किया और साथ ही वेद की मान्यताओं पर आाधारित अपने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की रचना भी की। राम के जीवन में हम एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श राजा, आदर्श मित्र, आदर्श शत्रु, ईश्वर भक्त, वेदानुयायी, ब्रह्मचर्य के पालक, प्रजा पालक, भक्त वत्सल, आदर्श पति, तपस्वी, धर्म पालक, ऋषि के प्रति गहरा श्रद्धाभाव रखने वाला व धर्म का रक्षक आदि अनेक रूपों व गुणों को पाते हैं। यदि हम रामचन्द्र जी के इन गुणों को अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा कल्याण हो सकता है। यही कारण था कि लाखों वर्ष पूर्व उत्पन्न राम व उनके रावण के साथ युद्ध आदि की घटनाओं पर आधारित बाल्मीकि रामायण व राम चरित मानस ग्रन्थों ने देशवासियों के हृदय पर अपनी अमिट छाप बनाई। आज भी रामायण व इस पर आधारित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन किया जाता है। रामचन्द्र जी के जीवन से वर्तमान समय में भी लोग अपनी घरेलू व राजनीति की समस्याओं के समाधान ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। महर्षि दयानन्द ने बाल्मीकि रामायण को इतिहास का ग्रन्थ स्वीकार कर इसके विश्वसनीय, सृष्टिक्रम के अनुकूल तथा वेदानुकूल भाग का अध्ययन करने का विधान वैदिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में किया है।

आर्यसमाज में अनेक विद्वानों ने रामायण पर कार्य किया और उसका मन्थन कर उसका वेदानुकूल व विश्वसीय इतिहास सम्बन्धी भाग श्लोकों के हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत किया है। वर्तमान में आर्यसमाज में पं. आर्यमुनि, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती तथा महात्मा प्रेमभिक्षु कृत बाल्मीकि रामायण पर आधारित ग्रन्थों का विशेष प्रचार है। हमारे पास यह सभी ग्रन्थ उपलब्ध हैं तथा रामायण पर कुछ अन्य आर्य विद्वानों के अनुवाद व ग्रन्थ उपलब्ध है। हमने स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी की बाल्मीकि रामायण को आद्योपान्त पढ़ा है। यह ग्रन्थ पढ़ने योग्य है। इसमें प्रक्षिप्त भाग को हटाकर रामायण को रोचक रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़ने से पाठक को रामचन्द्र जी विषयक प्रायः पूर्ण इतिहास का ज्ञान होता है। यह ग्रन्थ यद्यपि एक वृहद ग्रन्थ है परन्तु गीता प्रेस की बाल्मीकि रामायण की तुलना में काफी छोटा है। इसे कुछ ही दिनों में पढ़ा जा सकता है। इसे पढ़ने से रामायण का लगभग पूर्ण ज्ञान हो जाता है जितना ज्ञान किसी मनुष्य के लिये आवश्यक है। हम अनुभव करते हैं कि प्रत्येक परिवार में यह ग्रन्थ होना चाहिये और सबको इसका तन्मयता से पाठ करना चाहिये।

राम चन्द्र जी की शिक्षा-दीक्षा ऋषियों के सान्निध्य में हुई थी जहां वेदाध्ययन सहित उन्हें क्षत्रिय धर्म व शस्त्रास्त्र संचालन की शिक्षा भी दी जाती थी। राम व लक्ष्मण ऋषियों के सान्निध्य में सन्ध्या व यज्ञ करते थे तथा अपने कर्तव्यों सहित शस्त्र संचालन एवं वेदज्ञान प्राप्त करते थे। रामायण के अनुसार रामचन्द्र जी का स्वरूप व व्यक्तित्व अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक, प्रभावशाली एवं विद्या व सदाचार से परिपूर्ण था। वह माता, पिता तथा आचार्यों के आज्ञाकारी व सेवक तो थे ही साथ ही अपने भाईयों के प्रति भी उनका व्यवहार वेद व शास्त्रों की मर्यादाओं के अनुसार था। प्रजा भी उनके व्यक्तित्व एवं व्यवहार से प्रभावित व उन पर मुग्ध थी। रामचन्द्र जी ऋषि विश्वामित्र के साथ वन में रहे और उनसे अध्ययन किया। वनों में ऋषियों के अनेक आश्रम थे जहां ऋषि-मुनि-विद्वान- वानप्रस्थी व संन्यासी वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते हुए शोध, अनुसंधान एव शस्त्र विज्ञान सहित आयुद्ध निर्माण का कार्य किया करते थे। लंका का राजा रावण इन ऋषियों के कार्यों के प्रति आजकल के आतंकवादियों के स्वभाव वाला था तथा निर्दोष और ईश्वर भक्ति में मग्न ऋषियों व उनके आश्रम में निवास करने वाले विद्यार्थियों पर अत्याचार करता था।

क्रमशः.....४ पर

वेदामृतम्

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष, या दोहते प्रति वरं जरित्रे।
अच्छिद्रोध्नी पीपयद् यथा नः, सहस्रधारा पयसा मही गौः।।

ऋ० १०.१३३.७

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन् ! तुम्हीं विश्व के सकल ऐश्वर्यों को उत्पन्न और प्रदान करने वाले हो। हम तुम्हीं से अभीष्ट पदार्थों की याचना करते हैं और तुम हमारी उस प्रार्थना को पूर्ण भी किया करते हो। आज हम तुमसे ऐसी गौ की याचना कर रहे हैं, जो स्तोता को अभिलषित वर प्रदान कर देती है, उसकी मनःकामना को पूर्ण कर देती है। यह वैदिक गौ अपने अन्दर कई अर्थों को अन्तर्निहित किये है। सर्वप्रथम 'गो' शब्द गाय-पशु का वाची है। हम ऐसी अच्छिद्र ऊधस्वाली सहस्रधारा गाय मांगते हैं, जो अपने दूध से हमें परिपुष्ट करती रहे, जिससे हमें इतनी प्रचुर मात्रा में दूध प्राप्त हो कि वह केवल हमारे परिवार के लिए ही यथेष्ट न हो, अपितु उससे अतिथियों और अभ्यागतों का भी पोषण होता रहे। 'गो' शब्द पृथिवी का भी वाचक है। हमें भूमि-रूपिणी गौ भी प्राप्त हो, जिससे हम कृषक बनकर उससे सहस्रों धाराओं में अन्नों, रसीले फलों आदि का दोहन करते रहें तथा बह हमें अपने अन्दर निहित सुवर्णादि ऐश्वर्य भी सहस्र धाराओं में प्रदान करती रहे, और उसका अन्न, घन आदि का भण्डार कभी समाप्त न हो। 'गौ' वाणी को भी कहते हैं। हमें वह बाक्-शक्ति-रूपिणी गौ भी प्राप्त हो, जो निर्दोष रहती हुई ज्ञान की सहस्रों धारायें जगतीतल पर बहाती है। 'गो' वेदवाणी का भी नाम है। हमें वह दिव्य वेदवाणी-रूपिणी गौ प्राप्त हो, जो अपने अच्छिद्र ऊधस् में अनन्त ज्ञान-विज्ञान का रस भरे हुए है, तथा अपने पाठकों और श्रोताओं को सहस्रों धारों में वह रस प्रदान करती है।

हे इन्द्र प्रभु ! यदि इन सब वरदात्री महिमामयी गौओं का स्वामी तुम हम स्तोताओं को बना दोगे तो उनके अमृतोपम दूध से हम निश्चय ही समृद्ध एवं परिपुष्ट होकर शिखरारूढ़ और सर्वोन्नत हो सकेंगे। हे भगवन्! हम स्तोतृजनों की स्तुति को सफल करो, मुंहमांगी वस्तु देकर हमारा कल्याण करो, हमें गोपाल बना दो, हमें कामधेनुएँ, प्रदान कर दो।

साभार-वेदमंजरी

स्व.श्री देवपाल वर्मा की पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि यज्ञ

आर्य समाज फतेहपुर पो० बनत जिला शामली में दिनांक १८ अप्रैल को आर्य समाज फतेहपुर के संस्थापक स्मृति शेष श्री देवपाल वर्मा जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य समाज द्वारा यज्ञ कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यज्ञ में मुख्य रूप से श्री नरेन्द्र पाल वर्मा ब्रह्मपाल सिंह सुक्रमपाल योगेन्द्र वर्मा सत्यवीर सिंह ब्रजेन्द्र पाल वर्मा इन्दरपाल सिंह रूचिन सिद्धार्थ एवं गुड्डू आदि ने भाग लिया तथा भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

श्रीमद्दयानन्द सरस्वती की प्रथम जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर फरवरी 1925 में

श्री पं. बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार का भाषण–

पंजाबी ने उत्तर दिया ''बताऊं''। इस पर (वेन यू०पी० वाले ने कहा ''बताओ भाई बताओ''। ऐसे ही ३-४ बार होता वेद रहा। एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। वही ''कुकड़ी और बताऊ का मसला वेड़ों के साथ हुआ है। और उस धन की होगी ने बढ़ाया। नऋग्वेद में लिखा है, ''गौओं के चमड़े की अत किया और सब की उसमें पीसा और सारा अन्न पीला, एवं उसके भीतर उसके बच्चों की मिला दिया और धनुषवारण लेकर रखवाली की और बड़े मजबूत हो गये ।'' यह मन्त्र पढ़ा गया और कहा गया कि प्राचीन संग शिकार करते थे। भाइयो ! जब तक कुकड़ी का अर्थ नहीं समके थे वह मुर्गा थी, परन्तु जब उसका भेद बतलाया गया तो उसका अर्थ कुछ और ही गया। गो शब्द का अर्थ वाणी, पृथ्वी और गाय होता है। अच्छा भाई यहां गाय के स्थान में पृथ्वी रखिये। वर्षा ऋतु में जल पड़ने से मिट्टी जम गई। हल लाकर उसे जीता तो उसके हेले „ अलग हो गये। सेती पदा हुई। उसे खाया पिया तो हट्टे कई हो गये। यह एक नमूना है। एक दूसरा नमूना आपको बतलाता हूँ। दूसरे नमूने में रन्तिदेव के नाम पर दो हजार गोयों का वथ हुआ था। अब जरा इतिहास की ओर चलें। जैसे गो शब्द के साथ अनर्थ हुआ वैसे ही बहुत से शब्दों के साथ हुआ है। अब 'मांस' शब्द को ले लीजिये। संस्कृत में मांस शब्द के भी अनेक अर्थ हैं। उदाहरणार्थ, फल के छिलके को त्वचा कहते हैं। हड्डी को गुठली कहते हैं और गुद्दे को मज्जा कहते हैं। आम का फल देखने से उसमें केसर, मांस, मज्जा और गुठली सब अलग-अलग दिखलाई पड़ते हैं। अथर्ववेद में रोहित औषधि का वर्णन किया गया है। हमारी चर्बी से तुम्हारी चर्ची ठीक हो, मांस से मांस ठीक हो और रुधिर से रुधिर ठीक हो। इसने बड़ा भ्रम डाला है। यदि आप किसी देशी रियासत में चले जांय और किसी व्यक्ति से चार आने का गोश्त मोल लाने के लिए कहें तो प्रश्न होगा कि किस पशु का गोस्त लाना चाहिए, परन्तु उससे गो मांस नहीं समझा जायगा। यदि ब्रिटिश राज्य में चले जांय तो गोमांस भी समझा जायगा। वहां (देशी राज्य में) गोहत्या कानून की दृष्टि से निषिद्ध है। इसी प्रकार वेद की आज्ञा है कि जो मनुष्य, मनुष्य को मार कर अपना शरीर पुष्ट करे अथवा घोड़े को वा किसी अन्य पशु को बा गौ को जिसे वह ''गौ-माता'' के नाम से पुकारता है, मार कर व्यवहार करे, यहां तक कि यह गौ-दुग्ध को अनुचित रूपेण प्रयोग में लाये तो राजा को अधिकार है कि उसे प्राण दण्ड दे दे। जिस प्रकार देशी राज्यों में 'मांस' शब्द से गोमांस का बोध नहीं होता, उसी प्रकार वेद में 'मांस' शब्द का अर्थ गोड़त नहीं समझा जा सकता। हमारे भाइयों का कथन है कि वेद मांस खाने का निषेध करते हैं परन्तु यज्ञ कार्यों में उसका विधान करते हैं। अब में दिखलाता हूँ कि यज्ञ में भी मांस की आज्ञा नहीं दी गई है। अथर्व वेद में एक मन्त्र आता है जिसका अर्थ है, कि वह यजमान बड़ा मूर्ख है जो कि आशय को न समझ कर गो, कुत्ते आदि पशुओं के अंग काट कर यज्ञ में डालता है। इसी मन्त्र का अनुवाद ग्रीफिक साहिब ने अंग्रेजी में किया है। वे कहते हैं कि इस मन्त्र ने बड़ा गढ़ बड़ मचाया है। और इसीलिए उन्होंने टिप्पणी में लिख दिया है कि यहां वेद का अर्थ अस्पष्ट है। मनु महाराज भी मांस का निषेध करते हैं। वस्तुतः हिंसा की कहीं भी आज्ञा नहीं दी गई है। वेद में यह किसी स्थान पर नहीं बतलाया गया है कि मछली के मांस को पका कर यज्ञ में डालो । प्रत्युत यह कहा गया है कि उसमें उत्तमोत्तम अन्न डाला करो। आज ऋषि दयानन्द पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि ऋषि ने यह नई लहर कहाँ से चलादी बैन अब मैं उन वेदमन्त्रों को बतलाना चाहता हूँ जिनके आधार पर लोगों ने पशु-हिंसा करना आरम्भ किया। वेद में लिखा है कि गो की यज्ञ में आहुति दो। इससे यज्ञ में गो-हिंसा का प्रतिपादन मान लिया गया । परन्तु जिस मन्त्र को पढ़ कर आहुति दी जाती है उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उस मन्त्र में बतलाया गया है कि वह गाय शत्रुओं का नाश करने वाली है। उससे अन्न भी उत्पन्न होता है। वह वरुण की जिह्वा भी है। भाइयो । जब कुकड़ी का प्रभाव बतलाया गया था तो बह साफ ज्ञात हो गया था। उसी प्रकार जब आपने इस गाय का बयान पर लिया कि इसमें शत्रों के मुंह बन्द करने की शक्ति है, यह बरुण की जिहा है एवं वरुण के पेट में घुसी हुई है, यही नहीं, इसकी महिमा पृथ्वी और आकाश में व्याप्त है, इससे सब प्रकार के पौदे उत्पन्न होते हैं, तब इन सब बातों से प्रकट है कि इस प्रकार की गाय कोई साधारण गाय नहीं है। मुझे लम्बी यात्रा अल्प समय में ही समाप्त करनी है, नहीं तो मैं इस सूक्त की पूरी व्याख्या सुनाता, जिसको सुन कर आपका अश्रुपात हो जाता।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

(समीक्षक) क्या कठोर दुःख देने वाला दयालु खुदा पापियों पुण्यात्माओं पर है अथवा मुसलमानों पर दयालु और अन्य पर दयाहीन है? जो ऐसा है तो वह ईश्वर ही नहीं हो सकता। और पक्षपाती नहीं है तो जो मनुष्य कहीं धर्म करेगा उस पर ईश्वर दयालु और जो अधर्म करेगा उस पर दण्डदाता होगा तो फिर बीच में मुहम्मद साहेब और कुरान को मानना आवश्यक न रहा। और जो सब को बुराई कराने वाला मनुष्यमात्र का शत्रु शैतान है उस को खुदा ने उत्पन्न ही क्यों किया ? क्या वह भविष्यत् की बात नहीं जानता था? जो कहो कि जानता था परन्तु परीक्षा के लिये बनाया तो भी नहीं बन सकता क्योंकि परीक्षा करना अल्पज्ञ का काम हैय सर्वज्ञ तो सब जीवों के अच्छे बुरे कर्मो को सदा से ठीक-ठीक जानता है। और शैतान सब को बहकाता है तो शैतान को किसने बहकाया ? जो कहो कि शैतान आप से आप बहकता है तो अन्य भी आप से आप बहक सकते हैं: बीच में शैतान का क्या काम ? और जो खुदा ही ने शैतान को बहकाया तो खुदा शैतान का भी शैतान ठहरेगा। ऐसी बात ईश्वर की नहीं हो सकती। और जो कोई बहकाता है वह कुसग तथा अविद्या से भ्रान्त होता है।। ३३ ।।

३४-तुम पर मुर्दार, लोहू और गोश्त सूअर का हराम है और अल्लाह के विना जिस पर कुछ पुकारा जावे।।

मं० १। सि० २० सू० २। आ० १७३।।

(समीक्षक) यहां विचारना चाहिये कि मुर्दा चाहे आप से आप मरे वा किसी के मारने से दोनों बराबर हैं। हां। इन में कुछ भेद भी है तथापि मृतकपन में कुछ भेद नहीं। और जब एक सूअर का निषेध किया तो क्या मनुष्य का मांस खाना उचित है? क्या यह बात अच्छी हो सकती है कि परमेश्वर के नाम पर शत्रु आदि को अत्यन्त दुःख देके प्राणहत्या करनी ? इस से ईश्वर का नाम कलंकित हो जाता है। हां! ईश्वर ने विना पूर्वजन्म के अपराध के मुसलमानों के हाथ से दारुण दुःख क्यों दिलाया? क्या उन पर दयालु नहीं है? उन को पुत्रवत् नहीं मानता ? जिस वस्तु से अधिक उपकार होवे उन गाय आदि के मारने का निषेध न करना जानो हत्या करा कर खुदा जगत् का हानिकारक है। हिंसारूप पाप से कलंकित भी हो जाता है। ऐसी बातें खुदा और खुदा के पुस्तक की कभी नहीं हो सकतीं।।३४।।

३५-रोजे की रात तुम्हारे लिये हलाल की गई कि मदनोत्सव करना अपनी बीबियों से। वे तुम्हारे वास्ते पर्दा हैं और तुम उन के लिये पर्दा हो। अल्लाह ने जाना कि तुम चोरी करते हो अर्थात् व्यभिचार, बस फिर अल्लाह ने क्षमा किया तुम को बस उन से मिलो और ढूंढो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है अर्थात् सन्तान, खाओ पीयो यहां तक कि प्रकट हो तुम्हारे लिये काले तागे से सुपेद तागा -वा रात से जब दिन निकले।।

मं० १। सि० २० सू० २। आ० १८७।।

(समीक्षक) यहां यह निश्चित होता है कि जब मुसलमानों का मत चला वा उसके पहिले किसी ने किसी पौराणिक को पूछा होगा कि चान्द्रायण व्रत जो एक महीने भर का होता है उस की विधि क्या है? वह शास्त्रविधि जो कि मध्याह्न में-चन्द्र की कला घटने बढ़ने के अनुसार ग्रासों को घटाना बढ़ाना और मध्याह्न दिन में खाना लिखा है उस को न जानकर कहा होगा कि चन्द्रमा का दर्शन करके खाना, उस को इन मुसलमान लोगों ने इस प्रकार का कर लिया। परन्तु व्रत में स्त्री समागम का त्याग है वह एक बात खुदा ने बढ़कर कह दी कि तुम स्त्रियों का भी समागम भले ही किया करो और रात में चाहे अनेक बार खाओ। भला यह ५:१६ चउ, २३/४/२०२४, वच१५६८७: व्रत क्या हुआ ? दिन को न खाया रात को खाते रहे। यह सृष्टिक्रम से विपरीत है कि दिन में न खाना रात में खाना।।३५।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

ध्यान किसका और कैसे करें

(महाराणा उदयपुर से प्रश्नोत्तर- अगस्त, १८८२)

स्वामी जी ११ अगस्त, सन् १८८२ से १ मार्च सन् १८८३ तक उदयपुर में रहे। इसी अवधि में एक दिन प्रातः काल के समय जब स्वामी जी घ्यान से निवृत्त हुए तो दर्बार (महाराणा उदयपुर) ने उनसे प्रश्न किया कि जब किसी मूर्तिमान् वस्तु को चाहे वह कैसी ही हो आप नहीं मानते तो घ्यान किसका करें ?

स्वामी जी ने उत्तर दिया कि कोई चीज मानकर ध्यान नहीं करना चाहिये। ईश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वसृष्टिकर्ता, सृष्टि को एक क्रम में चलाने वाला, नियन्ता, पालनकर्ता और ऐसे ही अनेक ब्रह्माण्डों का स्वामी और निन्यता ऐसी-ऐसी उसकी महिमा का स्मरण करके अपने चित्त में उसकी महानता का ध्यान करना चाहिए अर्थात् इसी प्रकार समस्त विशेषणों से युक्त परमेश्वर को स्मरण करके उसका ध्यान करना और उसकी अपार महिमा का वर्णन करना संसार के उपकार में चित्त की वृत्ति लगाने की प्रार्थना करना, यह ध्यान है।

ब्रह्मचर्य का महत्त्व

(लेखराम पृष्ठ ५५६)

(कविराज शामलदास जी उदयपुर से वार्तालाप - अगस्त, १८८२)

शामलदास ने कहा-

एक दिन मैंने निवेदन किया कि आपका स्मारक चिह्न बनना चाहिए। कहा कि नहीं, प्रत्युत मेरी भस्मी को किसी खेत में डाल देना, काम आयेगी। कोई स्मारक न बनाना, ऐसा न हो कि मेरी मूत्तिपूजा आरम्भ हो जाये। मेरा (शामलदास) का विचार था कि अपना प्रस्तर मूति बनवाऊँ। कड़ा कि- कविराज जी ऐसा न करना मूत्तिपूजा का मूल यही है ? उनकी समस्त बातें श्रेष्ठ थी। ब्रह्मचारी तो प्रथम श्रेणी के थे। जहां तक उनसे हो सकता पर स्त्रियों को देते ही नहीं थे। उनका कथन था कि 'वीर्य का नाम बानू का नाश है। वह वीर्य वड़ा रत्न है। यदि मार्ग में जाते हुए कहीं कोई स्त्री आ जाती तो उस ओर पीठ कर लिया करते थे। उनकी यह बातें ढोंग नहीं बल्कि सच्ची और हार्दिक थी, क्योंकि वे एक महान् जितेन्द्रिय थे। (लेखराम पृ० ५५७)

क्रमशः अगले अंक में...

राष्ट्र की ज्वलन्त समाजिक समस्याओं हेतु

नारी नवरात्र एवं विजयादशमी एक संदेश

-डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार

राष्ट्र के सभी बहनों एवं भाइयों आइए हम सब मिलकर नवरात्रि के पावन अवसर पर एक वैचारिक क्रान्ति का आरम्भ करते हैं एक ऐसी क्रान्ति जो मानवीय मूल्यों की आधार शिला से राष्ट्र-निर्माण का भवन तैयार कर देगी। नवरात्रि, उपवास एवं व्रत तथा देवी दुर्गा एक परिचय-नवरात्रि

संक्षेपतः नवरात्रि ६ संख्या का महत्व शरीर के नवद्वार एवं नौ ग्रंथियों से है, जो मानव की पावनता (विचारों की शरीर की एवं हमारे आस-पास की स्वच्छता) प्रभु का निरंतर ध्यान, संयम आदि में साधक का कार्य करती है।

वस्तुतः शरद ऋतु में आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लगभग १२ दिनों तक मनुष्य की जठराग्नि क्रिया मंद हो जाती है। जिसके कारण पाचन क्रिया शिथिल होती है, जिसके कारण अल्प भोजन या उपवास लाभकारी है।

हालाँकि कही भी किसी ग्रन्थ में नौ दिन का कोई सटीक प्रमाण नहीं होता है, किन्तु अनुमानतः उपर्युक्त वर्णन एवं ६ को ६ से गुणा करने पर भी ६ (८१, ९१=६) ही आता है, सम्भवतः इन्ही कारणों को आधार माना हो।

उपवास

बसंत ऋतु के चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा में लगभग १२ दिनों तक शरीर की जठराग्नि क्रिया तीव्र हो जाती है, जिससे पाचन क्रिया पुनः शिथिल हो जाती है। अतः उपवास या अल्प भोजन हमें स्वस्थ रखता है। उपवास रखना या कम खाना हमें स्वस्थ जीवन प्रदान करता है।

उपवास का शारीरिक एवं मानसिक प्रभाव

उपवास को यदि अधिक जल-सेवन के साथ आंशिक रूप से किया जाए तो यह हमारी शारीरिक क्रियाओं को सुचारू रूप से संचालित करता है। किन्तु अधिक उपवास (आयुर्वेद के नियमों के विरूद्ध) रखा जाए तो शरीर रुग्ण हो जाता है।

आंशिक उपवास मन को शान्त रखता है। ध्यान, योग एवं साधना में सहायक होता है।

व्रत क्या है?

लोग कहते है मैने व्रत रखा है, तो भोजन का त्याग व्रत नहीं है यजुर्वेद १८/३० मंत्र में व्रत की महिमा का अत्यन्त ग्राह्य वर्णन है -

''व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।''

अर्थात् व्रत एक शुभ संकल्प है, एक दृढ़ पुरूषार्थ है, जिससे मनुष्य दीक्षित होता हुआ कर्तृतव्य-दक्षता से श्रद्धा पूर्वक सत्य लक्ष्य को प्राप्त करता है।

व्रत के लिए दक्षता की अत्यधिक आवश्यकता है। समाजहित एवं राष्ट्रहित में शुभ कार्यों के लिए लिया गया संकल्प एवं किया गया कल्याणकारी कार्य व्रत है। आत्म-समर्पण व्रत है।

प्रथम शैलपुत्री का संदेश है-

स्त्री का शिक्षित होना उतना ही आवश्यक है जितना हिमालय की अखण्डता जो यह सिखाता है कि स्त्रियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो, विषम परिस्थितियों में भी शिला की भांति डट कर सामना करते हुए समस्याओं पर विजय प्राप्त करें।

द्वितीय ब्रहमचारिणी का संदेश -

शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य दीक्षित होना है। इस संदर्भ में यर्जुवेद (१४६४) में नारी को 'स्तोमपृष्ठा' शब्द से पुकारा गया है। जिसका अर्थ है, माता के रूप में नारी की अपार महिमा। अर्थात् वह सार सम्भल करने वाली, बच्चों एवं पति को सभंलने वाली तथा समाज के ध्येय को ध्यान में रखने वाली है।

तृतीय चन्द्रघण्टा का संदेश-

जो नारी स्वयं अपनी संतानों को प्रत्येक बुराइयों से बचाने का संदेश देती है।

चतुर्थ कूष्माण्डा माता का संदेश-

अति महत्वपूर्ण संदेश है, जो पुत्रों (पिता, पति या भाई-किसी भी रूप में) को नारी का सम्मान करने की सीख देता है। अपनी जनमदायनी माँ को पीड़ा न देने का संदेश, बहनों का स्नेह एवं रक्षा करने का संदेश तथा बेटियों को वात्सल्य, दुलार एवं सक्षम बनाने का संदेश देता है।

पंचम स्कंदमाता माता का संदेश

सभी के लिए अपनी संतानों में नैतिक गुणों को, मानवीय मूल्यों को, चारित्रिक दृढ़ता को संजोने एवं पिरोने की सीख है। क्योंकि जितनी शिक्षा एवं संस्कार एक माँ अपने बच्चों में पिरो सकती है उतना एक हजार गुरू मिलकर भी नही कर सकतें।

षष्ठं कात्यायनी का संदेश-

हमारे राष्ट्र की संस्कृति मात्र से है। जिसमें युर्जवेद के मंत्र की एक 'सूक्ति' मुझे स्मरण आती है- 'सुवपरणों अवयथमाना पृथिविं वृंह।' अर्थात् हे नारी तू किसी से पीड़ित न होती हुई राष्ट्रभूमि को दृढ़ कर। यही हमारे प्यारे राष्ट्र की संस्कृति है कि देश की वीर माताओं ने ऐसी संतानों का जन्म दिया जिन्होंने थल से जल एवं आकाश से अंतरिक्ष तक बुराइयों को मिटा कर शत्रुओं का संहार कर दिया ।

सप्तम् माँ कालरात्रि का संदेश

परिवार, समाज या राष्ट्र की किसी भी रूप में क्षति पहुँचाने वाले दुष्टों (स्त्री हो या पुरूष) के लिए ऋग्वेद का उपदेश है कि राष्ट्र हित में सोचने एवं कार्य करने वाली नारियों तुम राष्ट्र की शिरोमणि हो एवं तुम राष्ट्र की उड़ती हुई पताका हो, अतः सभी दुष्टो का नाश कर दो।

अष्ठम् महागौरी का संदेश-

इस रूप में ऐसी पावनता का वर्णन है, जो पराक्रमयुक्त है। ऐसी पवित्रता जो स्त्री की आँखों में तेज भर दे। मैं प्रबलता से कहना चाहूँगी यह रूप सेक्स रैकेट या पार्न चलाने वाले दुष्ट पुरूषों एवं कुटिल स्त्रियों दोनों को वज्र शब्दों में संदेश देता है कि इन्हें स्वयं अपनी आँखों में छूरा भोक लेना चाहिए, जो लड़कियों को गुमराह कर गर्त में धकेल देते हैं जबकि हमारे राष्ट्र की संस्कृति स्त्रियों के प्रति माँ एवं बहन का भाव रखना सिखाती है।

नवरात्र का संदेश

देश की सभी स्त्रियों से आह्वान करूंगी कि हमारा व्रत सच्चे अर्थों में तभी पूर्ण होगा जब हम कानून, संविधान या किसी अन्य माध्यम के सहारे न रह कर अपने अधिकारों के लिए शिक्षा, संस्कार एवं संस्कृति के लिए स्वयं का जागरूक करेंगे। अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि हमें राम के लिए कौशल्या बनना पड़ेगा, शिवाजी के लिए जीजाबाई बनना पड़ेगा महाराणा प्रताप के लिए जयवंता बाई बनना पड़ेगा।

वेदों में अनेक नारी वाचक देवियों का उल्लेख किया गया है- धन की देवी लक्ष्मी, शक्ति की दुर्गा एवं विद्या की सरस्वती इनके अतिरिक्त अदिति, इला, पृथ्वी आदि दिव्य गुणों की माता, पुत्री एवं कन्या के रूप में माना गया है।

वर्तमान में भी उपयुक्त बातें प्रसंगिक हैं। निःसंदेह नारी शक्ति स्वरूपा है एवं नवरात्र शक्ति पर्व, जिसकी प्रेरणा सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं सार्वभौमिक हैं। जहाँ एक ओर हमारा देश उन्नति के पथ पर अग्रसर है, एवं आर्थिक सम्पन्नता, तकनीकि, सामाजिक क्षमता तथा राजनीतिक क्षमता आदि का दिग्दर्शन होता है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक हो, औद्योगिक हो या अन्य अनेक क्षेत्र जहाँ देवियों की संख्या अत्यन्त सीमित है। सर्वाधिक विध्वंसक स्थति तो तब हो जाती है, जब वर्तमान में अनेक स्त्रियाँ यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा व भ्रूण हत्या आदि ज्वलन्त समस्याओं से पीड़ित हैं।

चूंकि 'माता निर्माता भवति अर्थात् माँ परिवार, समाज एवं राष्ट्र की निर्मार्थी है। इसी आदर्श वाक्य ने मेरे नारी सुलभ मन को यह प्रेरणा दी कि इन ज्वलन्त समस्याओं के समाधान की एक आहूति दूँ। अध्यनोपरानत मैंने पाया कि नवरात्र का सार एवं संदेश है, नारी की शिक्षा, संस्कार तथा संस्कृति।

दूसरा सार संस्कार के अन्तर्गत तृतीय चन्द्रघण्टा जो नारी को स्वयं एवं अपनी संतानों को प्रत्येक बुराइयों से बचाने का संदेश है।

चतुर्थ कूष्माण्डा अति महत्वपूर्ण है, जो पुत्रों (पिता, पति या भाई किसी भी रूप में) को नारी का सम्मान करने की सीख देता है। अपनी जनमदायनी माँ को पीड़ा न देने का संदेश, बहनों का स्नेह एवं रक्षा करने का संदेश तथा बेटियों को वात्सल्य, दुलार एवं सक्षम बनाने का संदेश देता है।

पंचम स्कंदमाता में अपनी संतानों में नैतिक गुणों को, मानवीय मूल्यों को, चारित्रिक दृढ़ता को संजोने एवं पिरोने की सीख है। क्यों जितनी शिक्षा एवं संस्कार एक माँ अपने बच्चों में पिरो सकती है उतना एक हजार गुरू मिलकर भी नही कर सकतें।

मेरे प्यारे राष्ट्र की सभी स्त्रियों को नवरात्र की सौगन्ध हैं नवमी के यज्ञ की पूर्णाहूति तभी कीजिएगा जब अपनी संतानों में अच्छे संस्कार दीजियेगा। इसमें संतानों के पिता का भी पूरा सहयोग होना चाहिए। क्योंकि संस्कार राष्ट्र निर्माण की आधराशिला है।

तीसरा सार संस्कृति के अन्तर्गत छष्ठम् कात्यायनी का संदेश हमारे राष्ट्र की संस्कृति मात्र से है। जिसमें युर्जवेद

के मंत्र की एक 'सूक्ति' मुझे स्मरण आती है- 'सुवपरणों अवयथमाना पृथिविं दृह। अर्थात् हे नारी तू किसी से पीड़ित न होती हुई राष्ट्रभूमि को दृढ़ कर। यही हमारे प्यारे राष्ट्र की संस्कृति है कि देश की वीर माताओं ने ऐसी संतानों का जन्म दिया जिन्होंने थल से जल एवं आकाश से अंतरिक्ष तक बुराइयों को मिटा कर शत्रुओं का संहार कर दिया ।

सप्तम् कालरात्री का संदेश है कि परिवार, समाज या राष्ट्र की किसी भी रूप में क्षति पहुँचाने वाले दुष्टों (स्त्री हो या पुरुष) के लिए ऋग्वेद का उपदेश है कि राष्ट्र हित में सोचने एवं कार्य करने वाली नारियों तुम राष्ट्र की शिरोमणि हो एवं तुम राष्ट्र की उड़ती हुई पताका हो, अतः सभी दुष्टो का नाश कर दो।

अष्ठम् महागौरी- इस रूप में ऐसी पावनता का वर्णन है, जो पराकर्मयुक्त है। ऐसी पवित्रता जो स्त्री की आँखों में तेज भर दे। मैं प्रबलता से कहना चाहूँगी यह रूप सेक्स रैकेट चलाने वाले दुष्ट पुरूषों एवं कुटिल स्त्रियों दोनों को वज्र शब्दों में संदेश देता है कि इन्हें स्वयं अपनी आँखों में छूरा भोक लेना चाहिए, जो लड़कियों को गुमराह कर गर्त में धकेल देते हैं जबकि हमारे राष्ट्र की संस्कृति स्त्रियों के प्रति माँ एवं बहन का भाव रखना सिखाती है।

अतः मैं पावन नवरात्र एव नवमी के माध्यम से देश की सभी स्त्रियों से विनती करूंगी कि हमारा व्रत सच्चे अर्थों में तभी पूर्ण होगा जब हम कानून, संविधान या किसी अन्य माध्यम के सहारे न रह कर स्वयं को अपने अधिकारों के लिए शिक्षा, संस्कार एवं संस्कृति के लिए स्वयं का जागरूक करेंगे। अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि हमें राम के लिए कौशल्या बनना पड़ेगा, शिवाजी के लिए जीजाबाई बनना पड़ेगा आदि।

दोहरा दो वही कहानी-

खूब लड़ी मर्दानी,
बन जायें हम भी झाँसी की रानी।

भगवान श्री राम का ग्राह्य स्वरूप एवं चरित्र

हमारी प्यारी भारत-माता-भूमि का यह परम सौभाग्य है जिसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के आदर्श जीवन-मूल्य, विलक्षण मर्यादा, अविस्मरणीय त्याग तथा तपस्या आदि की ग्राह्य एवं प्रेरक परम्परा प्राप्त रही है। इस श्रृंखला में स्वनामधन्य मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम जी का नाम सम्पूर्ण धरती पर अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं आदरपूर्वक लिया जाता है। मेरे विचार से भगवान श्रीराम के चरित्र एवं व्यक्तित्व ने हमारे राष्ट्र की संस्कृति, संस्कार आध्यात्मिक साहित्य, भक्ति भावना, मानवीय मूल्यों एवं देवत्व-परम्परा को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम सम्पूर्ण जनमानस के आराध्य हैं।

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम सम्पूर्ण मानव जगत में अटूट आस्था एवं आस्तिकता के प्रतीक माने जाते हैं। क्योंकि शिक्षित वर्ग हो अथवा अशिक्षित वर्ग सभी उठते-बैठते, खाते-पीते एवं चलते फिरते राम का नाम लेते हैं। शवकों शमशान भूमि तक ले जाते हुए भी राम नाम उच्चारित किया जाता है। सदियों सदियों से लोक-मन-मस्तिष्क पटल परभगवान श्रीराम का नाम अंकित है एवं सदा रहेगा। अतः यह अत्यन्त सार्थकता के साथ कहा जा सकता है कि श्रीराम जैसा चरित्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व भूतों न भविष्यतें ।

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहलाए?

माता-पिता का आज्ञापलन हो या भ्रात प्रेम सभी जाति एवं समस्त वर्ग के लोगों को स्नेह एवं सम्मान देने की बात हो अथवा परिवार समाज, राष्ट्र, आध्यात्मिक परम्पराओं के संरक्षण की बात हो, कही भी, कभी भी दिन, हो रात्रि, सुख, हो दुःख सदा-सर्वदा उन्होने अपने मानवोचित एवं देवोचित गुणों के साथ वे संयम एवं मर्यादा के सार्थक बने।

उनके द्वारा अनुपालित परम्पराओं एवं आदर्शों को ही महात्मा भरत ने रामराज्य माना। हम कह सकते हैं, कि उनका जीवन-चरित्र ही सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं भारत की सभी ज्वलन्त समस्याओं का ज्वलन्त समाधान है।

वे मर्यादाओं के रक्षक, पालक, एवं संचालक थे। इसी कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहा गया।

श्रीराम को 'भगवान' क्यों कहा गया?

विजयादशमी की सार्थकता को न समझना महामानव श्रीरामचन्द्र जी के साथ अन्याय है-

हम प्रतिवर्ष रामलीलाएँ जन्मोत्वसव, रामकथाएँ एवं मेले आदि का आयोजन करते हैं. किन्तु कहीं भी उनके पावन चरित्र को अपने जीवन में नहीं उतारते हैं। महापुरुषों के नाम पर भोग-विलासपूर्ण जीवन बौद्धिक एवं मानसिक दरिद्रता का परिचायक है तथा श्रीराम जी के साथ अन्याय है।

विजयादशमी की सार्थकता तब होगी जब हम भगवान श्रीरामचन्द्र जी के प्रेरक जीवन एवं ग्राह्य स्वरूप को अपने जीवन एवं आचरण में उतारेंगें रावण का पुतला जलाना एक व्यर्थ परम्परा है।

मेरी दृष्टि से रावण का पुतला जलाना नितान्त व्यर्थ परम्परा है। क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रावण से भी अधिक वैचारिक पतन से युक्त अनेक लोग राष्ट्र की मेरुदण्ड को निरंतर दुर्बल कर रहे हैं। रावण से कई गुना अधिक भोगी-विलासी लोगों को रावण का पुतला जलाने का कोई अधिकार नहीं है।

विजयदशमी का प्रेरक संदेश

भगवान श्रीराम की नीतियाँ ही इस राष्ट्र की अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की समस्त समस्याओं का ज्वलन्त समाधान हैं। वर्तमान में उनके आदर्शों, मर्यादाओं एवं परोपकार आदि की अत्यन्त आवश्यकता है।

छद्म वेशधारी साधु-संतों से सदैव सावधान रहना।

लक्ष्मण जैसी पवित्र दृष्टि भाभी एवं अन्य स्त्रियों के प्रति रखना।

मो०-९९३६३५३१७९

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी का परिचय

आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी भारतवर्ष (आर्यावर्त्त) के अयोध्या राज्य में सूर्य वंश के अन्तर्गत इच्छवाकु वंश में महारानी कौशल्या और महाराज दशरथ के यहाँ त्रेता युग के अन्तिम चरण चैत्र मास शुक्ल पक्ष नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे थे । उनकी बाल्यकाल की शिक्षा महर्षि वशिष्ठ के गुरुकुल में सम्पन्न हुईं। १६ वर्ष से २५ वर्ष की आयुपर्यन्त उनकी शिक्षा महर्षि विश्वामित्र के सान्निध्य में सम्पूर्ण हुई। २५ वर्ष की आयु में १८ वर्ष की राजकुमारी महाराज जनक की सुपुत्री सुश्री सीता से उनका विवाह हुआ । २५ वर्ष से ३७ वर्ष की आयु तक सभी राजकुमार अपने परिवार और प्रजा के साथ अपने राज्य में आदर्शमय जीवन व्यतीत करते रहें।

३७ वर्ष की आयु में, जब महाराज दशरथ ने श्रीराम का राज्याभिषेक करना चाहा तो महारानी कैकयी के वरदान के कारण उनको राज सिंहासन के स्थान पर १४ वर्ष का वनवास प्राप्त हुआ। उन्होंने माता-पिता की इच्छानुसार अपनी धर्मपत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन में निवास के लिए प्रसन्नता पूर्वक प्रस्थान किया। वनवास के दौरान अनेक कष्टों को सहन करके ऋषि महर्षियों से ज्ञान और उनके अनुभवों से शिक्षा ग्रहण करते हुए, असंख्य आततायियों का वध भी किया। उसी दौरान उनकी धर्मपत्नी सीता का लंका के राजा रावण द्वारा हरण किया गया। तत्पश्चात श्री राम ने सुग्रीव आदि से मित्रता करके समुद्र पर पुल बनाकर, लंका पहुँचकर, युद्ध में रावण को परास्त किया।

वनवास की अवधि समाप्त होने पर वे अयोध्या वापस आए एवं ५१ वर्ष की आयु में उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने लगभग ३० वर्ष १ मास २० दिन तक अयोध्या पर शासन किया। तदोपरांत वंश परम्परा के अनुसार तपस्या के लिए वन में चले गए।

श्रीराम चन्द्र जी के जीवन में गुण धर्म और स्वभाव का महत्वः

श्रीराम के शील, स्वभाव और गुणों का परिचय कराते हुए महर्षि बाल्मीकि जी लिखते है-

धर्मज्ञ सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।

यशस्वी ज्ञान सम्पन्न शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।

(व. रा. बा, सर्ग १/१२)

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम जी धर्मज्ञ (धर्म को विधिवत रूप से जानने वाले), सत्यप्रतिज्ञ (सत्य को धारण करने वाले), प्रजा के हित व कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्न करने वाले, यशस्वी (सर्वत्र यश और कीर्ति वाले), ज्ञानसम्पन्न (सम्पूर्ण विद्याओं से सुशोभित), निरन्तर अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को पवित्र रखने वाले, वश्यः (अपने सम्पूर्ण इन्द्रियों को नियंत्रित रखने वाले) और नित्यप्रति समाधि लगाने वाले थे।

धर्मज्ञ सत्यसंवश्च शीलवाननसूयकः।

क्षान्तः शान्त्वयिता श्लक्ष्णः कृतज्ञो विजितेन्द्रियः।।

(अयो, सर्ग २/३१)

वे धर्मज्ञ अर्थात धर्म को धारण करने वाले, सत्य का आचरण करने वाले, शीलवान, किसी के प्रति ईर्ष्या न करने वाले, सहनशील स्वभाव यानि पृथिवी के समान क्षमा करने वाले, सबको सान्त्वना देने वाले, सभी के प्रति कोमलता का भाव रखने वाले, कृतज्ञ यानि उपकार को न भूलने वाले थे। श्री राम जी जितेंद्रिय थे अर्थात् कानों से सुनकर, हाथों से छूकर, आँखो से देखकर, नाक से सूँघकर, मुँह से खाकर, वे न प्रसन्न होते थे और न दुःखी होते थे।

मृदुश्च स्थिरचित्तश्च सदा भव्योऽनसूयकः।

प्रियवादी च भूतानां सत्यवादी च राघवः।।

(वा.रा. अयो. सर्ग २/३२)

वे बड़े ही मृदु अर्थात सौम्य स्वभाव के, स्थिरचित्त अर्थात चित्त की वृत्तियों को संयमित रखने वाले, सदासुन्दर तथा मनोहर दिखने वाले, किसी के प्रति ईर्ष्या न करने वाले, मधुर भाषण यानि सत्य और प्रिय शब्दों का सभी के प्रति उपयोग करने वाले थे।

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्व च भाषते ।

उच्यभानोऽपि पुरुषं नोत्तरं प्रतिपद्ते।।

(वा. रा. अयो, सर्ग १/१०)

वे शान्तचित्त श्रीराम सदा मधुर वाणी में वार्तालाप करते थे और किसी कठोर प्रश्न का उत्तर भी अशिष्टता से नहीं देते थे।

वे नित्य कर्म संध्या वन्दना समय पर करते थे। महर्षि बाल्मीकी जी इसके विषय में लिखते हैंः-

कौशल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैव माह्दीकम् ।।

(वा. रा. बा. सर्ग २३/२)

जब प्रातःकाल हुआ तब महामुनि विश्वामित्र ने पर्णशैय्या पर सोये हुए राम से कहाः- हे कौशल्या के सुयोग्य पुत्र राम! हे नरशार्दूल! उठो, यह प्रातःकालीन संध्या का समय है। और शौचादि क्रिया से निवृत्त होकर, देव यानि ईश्वर का ध्यान करो और अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ करो।

तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नृपात्मजौ।

स्त्रात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम्।।

(वा. रा. बा. सर्ग २/३)

महर्षि के उदार तथा प्रिय वचन सुनकर राम लक्ष्मण उठे। उन्होंने स्नान करके सूर्य को अर्घ्य दिया और गायत्री मंत्र का जप किया।

श्रीराम की योग्यता और पराक्रम के बारे में महर्षि लिखते हैं-

राजविद्याविनीतश्च ब्राह्मणा-नामुपासकः।

ज्ञानवान् शीलसम्पन्नो विनीतश्च परंतपः।।

श्रीराम ने राजनीति की विद्या में विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त किया था। वे ज्ञान विज्ञान में पारंगत तथा ब्राह्मणों यानि चरित्रवान ज्ञानियों के उपासक अथवा प्रशंसक और सुशील,विनय संपन्न एवं परम तपस्वी थे।

यजुर्वेदविनीतश्च वेदविद्भिः सुपूजितः।

धनुर्वेदे च वेदे च वेदाङ्गेषु च निष्ठितः।।

श्रीराम ने यजुर्वेद के ज्ञान को विशेष रूप से प्राप्त किया थे। वे वेद विद्वानों के द्वारा भी पूजनीय थे तथा धनुर्वेद और चारों वेद एवं वेदाङ्गों के पारंगत विद्वान थे।

बभूव भूयो भूतानां स्वयंभूरिव समस्तः ।

सर्वे वेद विदः शूराः सर्वे लोकहिते रताः।।

अर्थात् श्रीराम ही नही अपितु वे चारों राजकुमार ब्रह्मा के समान विद्वान, शूरवीर, पराक्रमी और सभी प्राणियो के प्रति कल्याण की भावना रखने वाले थे।

श्रीराम ही नही यद्यपि उनके परम भक्त हनुमान भी परम विद्वान थे। किष्किन्धा में हनुमान जी का अपने भाई लक्ष्मण से परिचय कराते हुए श्रीराम कहते हैः-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेद धारिणः ।

नासामवेदविदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।

(वा.रा. किष्कि, सर्ग ३/२८)

जिसने ऋग्वेद की शिक्षा न प्राप्त की हो, जिसे यजुर्वेद का ज्ञान न हो और जो सामवेद का विद्वान न हो, वह ऐसी ज्ञानपूर्वक वार्तालाप नहीं कर सकता।

नूनं व्याकरणं कृत्स्त्रमनेन बहुधा श्रुतम्।

बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।

(वा. रा. किर्थिक सर्ग ३/२०)

ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने (हनुमान जी) व्याकरण शास्त्र का भली भाँति अध्ययन किया है। यही कारण है कि इनके साथ अत्यधिक वार्तालाप करने पर भी इन्होंने व्याकरण सम्बन्धी कोई गलती नहीं की।

पृष्ठ.....१ का शेष.....

बहुत से ऋषि व विद्वान इस कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त होते थे। अतः रामचन्द्र जी के वहां होने से उन्होंने ऋषियों को कष्ट देने वाले अनेक राक्षसों का वध किया था। एक राजा व राजकुमार होने के कारण उन्हें दोषी व अपराधी प्रवृत्ति के दुष्ट लोगों को दण्ड देने का पूर्ण अधिकार था।

रामचन्द्र जी ने गुरु विश्वामित्र जी के साथ राजा जनक की नगरी मिथिलापुरी में सीता के स्वयंवर समारोह में प्रवेश किया था और वहां एक प्राचीन भारी धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए उसे तोड़ डाला था। इस धनुष पर अन्य राजा प्रत्यंचा नहीं चढ़ा सके थे। यह राम की वीरता व पराक्रम का आरम्भ था। सीता से विवाह कर आप अयोध्या आये थे। कुछ दिन बाद आपके राज्याभिषेक का निर्णय आपके पिता दशरथ व मंत्री परिषद ने लिया था। पारिवारिक व देश की परिस्थितियों के कारण आपको अगले ही दिन १४ वर्ष के लिये वन जाना पड़ा। बाल्मीकि रामायण ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है 'आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।' इसका अर्थ है किःराज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिये विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में ऋषि बाल्मीकि जी ने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।' कहां तो रामचन्द्र जी को राजा बनना था और कहां अगले ही दिन उन्हें सभी राजकीय सुख-सुविधाओं का त्याग कर वन जाने को कहा गया। इस पर भी वह इन घटनाओं से किंचित विचलित हुए बिना पिता की आज्ञा पालन करने के लिए सहर्ष वन जाने के लिये तैयार हो गये। विश्व इतिहास में ऐसी घटना दूसरी नहीं है। आज राजनीति का स्तर कितना गिर गया है वह प्रायः सभी राजनीतिक नेताओं व उनके अनुचरों के दिन प्रतिदिन के बयानों से देखा व जाना जा सकता है। वह देश के हितों की उपेक्षा करने से भी गुरेज नहीं करते। दूसरी ओर राजा बनाने की घोषणा सुनकर भी राम के चेहरे पर प्रसन्नता का भाव नहीं देखा गया और वन जाने के लिये कहने पर भी उनके मुख पर किसी प्रकार के दुःख या चिन्ता का भाव नहीं था। यह स्थिति एक बहुत उच्च कोटि के योग साधक वा ईश्वर भक्त की ही हो सकती है। इससे रामचन्द्र जी के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है जो कि आदर्श है। इससे शिक्षा लेकर हम भी सुख व दुःख की स्थिति में स्वयं को समभाव वाला बनाकर जीवन को ऊंचा उठा सकते हैं। रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन करते हुए आर्य विद्वान श्री भवानी प्रसाद जी ने लिखा है 'वस्तुतः दशरथनन्दन राम स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिर्देशपालक पुत्र, एकपत्नी- व्रतनिरत पति, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृददुःख- विमोचक, मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक नरेश, सन्तान- वत्सलपिता और संसार मर्यादा-व्यवस्थापक, परोपकारक, पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौशल्योल्लासकारक, दशरथानन्द- वर्धन, जानकी जीवन, सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्यनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज आदि गुणों से युक्त थे।' यह सभी गुण अन्य कहीं किसी मानव में मिलना दुर्लभ है।

रामायण के सुग्रीव-हनुमान मित्रता, बालीवध, सुग्रीव को राजा बनाना, बाली के पुत्र अंगद को अपने साथ रखना, प्राणपण से ऋषि-मुनियों की रक्षा तथा राक्षसों का नाश करना, रावण को अपने दूतों द्वारा समझाना और सीता को लौटाने का सन्देश देना, रावण के भाई विभीषण को शरण देना और रावण के वध के बाद उन्हीं को लंका का राजा बनाना, १४ वर्ष बाद अयोध्या लौटकर भरत के आग्रह पर राजा बनना और अपनी तीनों माताओं को समानरूप से सम्मान देना, एक आदर्श राजा व पिता के रूप में प्रजा का पालन करना रामचन्द्र जी को एक आदर्श मनुष्य व मर्यादा पुरुषोत्तम बनाते हैं। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी है। इसी कारण मध्यकालीन अल्पज्ञानी लोगों ने वेदों से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें परमात्मा के समान पूजनीय स्वीकार किया और आज तक भी उनका यश कायम है। करोड़ो लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेते आये हैं व अब भी ले रहे हैं। यदि इतिहास में उपलब्ध सभी जन्म लेने वाले महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डालें तो रामचन्द्र जी के जैसा महापुरुष विश्व इतिहास में दूसरा उपलब्ध नहीं होता। आज भी रामचन्द्र जी का जीवन प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है। हमें बाल्मीकि रामायण का अध्ययन करने के साथ रामचन्द्र जी के गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करना चाहिये। इसी से हमारा जीवन सार्थक होगा। रामनवमी रामचन्द्र जी का जन्म दिवस है। इस दिन हमें उनके जीवन पर किसी वैदिक विद्वान की कथा व प्रवचन सुनना चाहिये, अपने परिवारों में वैदिक रीति से यज्ञ-हवन करना चाहिये और निर्धन परिवारों में अर्थ व वस्तु दान देकर पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहिये।

बन्धुओं, इस वर्ष २२ जनवरी २०२४ को भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में उनकी गरिमा के अनुरूप विश्व का एक बड़ा एवं भव्य मन्दिर उनके भक्तों द्वारा बन कर तैयार हुआ है और इसका उद्घाटन भी हुआ है। आज अयोध्या में रामनवमी का पर्व ५०० वर्षों बाद भगवान राम की गरिमा के अनुरूप उनके भक्तों द्वारा पूर्ण श्रद्धा से मनाया जा रहा है। इस मन्दिर के निर्माण में अगणित रामभक्तों के बलिदानों सहित हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री एवं सत्तारूढ़ दल भाजपा सहित विश्व के समस्त रामभक्तों व उनकी राम में अनन्य आस्था व श्रद्धा का योगदान है। इस वर्ष की रामनवमी पूर्व वर्षों से अधिक सन्तोष एवं आनन्द देने वाली है। इस राममन्दिर को बनाने में योगदान करने वाले सभी रामभक्तों को हम श्रद्धा सहित नमन करते हैं। राम चन्द्र जी के इस भव्य एवं विशाल स्मारक की रक्षा करना समस्त आर्य हिन्दू जाति का कर्तव्य है। हम अपने सभी मित्रों को आज रामनवमी वा रामचन्द्र जी के जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनायें देते हैं।

अहिंसा के संदेशवाहक श्रीरामचन्द्र जी

-प्रियांशु सेठ

रामायण के अध्ययन से हमें यह उपदेश मिलता है कि श्रीरामचन्द्र जी वैदिक धर्म के मानने वाले आर्यशील पुरुष थे। बालकाण्ड सर्ग १ श्लोक १२,१३,१५,१६ में श्रीराम जी के यथार्थ गुणों का वर्णन इस प्रकार मिलता है- 'धर्मज्ञ, सत्य प्रतिज्ञा, प्रजा हितरत, यशस्वी, ज्ञान सम्पन्न, शुचि तथा भक्ति तत्पर हैं। शरणागत रक्षक, प्रजापति समान प्रजा पालक, तेजस्वी, सर्वश्रेष्ठ गुणधारक, रिपु विनाशक, सर्व जीवों की रक्षा करने वाले, धर्म के रक्षक, सर्व शास्त्रार्थ के तत्ववेत्ता, स्मृतिमान्, प्रतिभावान् तेजस्वी, सब लोगों के प्रिय, परम साधु, प्रसन्न चित्त, महा पंडित, विद्वानों, विज्ञान वेत्ताओं तथा निर्धनों के रक्षक, विद्वानों का आदर करनेवाले जैसे समुद्र में सब नदियों की पहुंच होती है वैसे ही सज्जनों की वहां पहुंच होती है। परम श्रेष्ठ, हंस मुख, दुःख सुख के सहन कर्ता, प्रिय दर्शन, सर्व गुणयुक्त और सच्चे आर्य पुरूष थे।' अयोध्याकाण्ड सर्ग ३ श्लोक १२ में भी उनकी महिमा का गायन इस प्रकार है- 'अहिंसा, दया, वेदादि सकल शास्त्रों में अभ्यास, सत्य स्वभाव, इन्द्रिय दमन करना, शान्त चित्त रहना, यह छः गुण राघव (रामचन्द्र) को शोभा देते हैं।'

यद्यपि मौलाना समीर मुहम्मद को रामायण में राम के द्वारा पशु-हत्या, हिंसा एवं कौशल्या द्वारा पशु-सम्भोग का वर्णन मिलता है। यह लोग अपने धर्मग्रन्थों को छूते तक नहीं, जिसमें हिंसा, भोग-विलासादि का वर्णन यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है बल्कि हमारे धर्मग्रन्थों से अधूरे और प्रक्षेपयुक्त सन्दर्भ देकर हमारे ऋषियों, महापुरुषों पर आक्षेप करते हैं। इस लेख में हम इनके प्रत्येक आक्षेपों का खण्डन करते हैं-

आक्षेप १. राम के पिता दशरथ भी शिकार के लिए जाया करते थे। उन्होंने निर्दोष श्रवण कुमार पर तीर चलाकर हत्या की। -जगदीश्वरानंद कृत वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४८/९-१५

इससे उनपर हत्या और हिंसा का आरोप लगता है।

उत्तर- मौलाना साहब हमें इस श्लोक में 'शिकार' शब्द दिखा दें, बड़ी कृपा होगी।

जब राम को वनवास लिए छठी रात बीत रही थी तब राजा दशरथ को उसके पहले किये हुए दुष्कर्म का स्मरण हुआ। वह कौशल्या से कहने लगे-

'कल्याणि! मनुष्य शुभ या अशुभ जो भी कर्म करता है, अपने उसी कर्म के फलस्वरूप सुख या दुःख कर्ता को प्राप्त होते हैं।'

'श्रीराम को खोकर मैं पश्चाताप कर रहा हूं। मेरी बुद्धि कैसी खोटी है!

'कौशल्ये! पिता के जीवनकाल में जब मैं केवल राजकुमार था, एक अच्छे धनुर्धर के रूप में मेरी ख्याति फैल गयी थी। सब लोग यही कहते थे कि ''राजकुमार दशरथ शब्द-वेधी बाण चलाना जानते हैं।'' इस ख्याति में पड़कर मैंने यह एक पाप कर डाला था।

'देवी! उस अपने ही किये हुए कुकर्म का फल मुझे जस महान् दुःख के रूप में प्राप्त हुआ है...। -वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड सर्ग ६३ श्लोक ४,६,१०,११,१२, गीताप्रेस गो०

आगे दशरथ जी कहते हैं-

'वर्षा ऋतु के उस अत्यन्त सुखद सुहावने समय में मैं धनुष-बाण लेकर रथपर सवार हो व्यायाम करने के संकल्प से सरयू नदी के तट पर गया।'

'मेरी इन्द्रियाँ मेरे वश में नहीं थीं। मैंने सोचा था कि पानी पीने के घाटपर रात के समय जब कोई उपद्रवकारी भैंसा, मतवाला हाथी अथवा सिंह-व्याघ्र आदि दूसरा कोई हिंसक जन्तु आवेगा तो उसे मारूंगा।'

'उस समय वहां सब ओर अंधकार छा रहा था। मुझे अकस्मात् पानी में घड़ा भरने की आवाज सुनायी पड़ी। मेरी दृष्टि तो वहां तक पहुंचती नहीं थी, किंतु वह आवाज मुझे हाथी के पानी पीते समय होनेवाले शब्द के समान जान पड़ी।'

'तब मैंने यह समझकर कि हाथी ही अपनी सूंड़ में पानी खींच रहा होगा। अतः वही मेरे बाण का निशाना बनेगा। तरकस से एक तीर निकाला और उस शब्द को लक्ष्य करके चला दिया। वह दीप्तिमान् बाण विषधर सर्प के समान भयंकर था।' -वाल्मीकि रामायण, अयोध्या० ६३/२०,२१,२२,२३

टिप्पणी- पाठक ध्यान दें! दशरथजी कहते हैं ''मेरी इन्द्रियां मेरे वश में नहीं थीं अर्थात् मुझे डर लग रहा था। मैंने सोचा था कि पानी पीने के घाटपर जब कोई उपद्रवकारी भैंसा, मतवाला हाथी अथवा सिंह-व्याघ्र आदि दूसरा कोई हिंसक जन्तु आवेगा तो उसे मारूंगा।'' ऐसा उन्होंने राज्य की रक्षा के उद्देश्य से कहा था ताकि हिंसक जन्तुओं से राज्य में। उपद्रव न हो।

मैं पूछता हूं- प्रजा की रक्षा हेतु उपद्रवकारी जन्तुओं को मार भगाना क्या यह जीव-हत्या व हिंसा है? सब ओर अंधकार हो जाने के कारण उन्हें ज्ञात नहीं था कि वह एक मनुष्य है। इसे मात्र आकस्मिक घटना ही कहा जा सकता है। इस घटना के बाद उन्होंने स्वीकार भी किया कि मैंने जो पाप किया था, आज उसी का फल मुझे महान् दुःख के रूप में प्राप्त हुआ है। अतः उनपर हत्या का आरोप निर्मूल है।

नोट- कई टीकाकारों ने उक्त श्लोक के अर्थ में 'शिकार' शब्द जोड़ दिया है। जबकि मूल में 'शिकार' शब्द है ही नहीं। चाहे सौ टीकाकार अन्यथा अर्थ करें, लेकिन प्रामाणिक तो वाल्मीकि का ही लेख है। श्लोक इस प्रकार है-

तस्मिन्नतिसुखे काले धनुष्मानिषुमान् रथी।

व्यायामंतसंकल्पः सरयूमन्वगां नदीम्।।

यहां संस्कृत में ''व्यायामकृतसंकल्पः'' शब्द है अर्थात् 'व्यायाम के कृत संकल्प से दशरथ वन में गए।' अतः व्यायाम अर्थ ही सही और प्रमाणिक है।

व्यायाम अर्थ करने पर कुछ प्रश्न उभरते हैं जिसका उत्तर इस प्रकार दिया जाता है-

प्रश्न- व्यायाम करने जंगल में ही क्यों गए? व्यायाम तो महल में भी हो सकता है। वह क्षेत्र वन एवं हिंसक जन्तुओं से घिरा था अतः वहां मनुष्यों का जाना कैसे संभव है?

उत्तर- दशरथ जी व्यायाम के साथ संध्या करने भी जंगल जा सकते हैं। और राजा लोग जंगल जाकर ही व्यायाम करते थे। जैसाकि घुड़सवारी इत्यादि। नदी तट पर व्यायाम भी होता है व संध्योपासना तो नदी के पास कर ही सकते हैं। वह क्षेत्र इतना जंगली भी नहीं था कि वहां कोई न आये। देखो, जब वहां श्रवणकुमार आ गया, मतलब कि वहां इंसान आते जाते रहे होंगे। ये नहीं कि वीरान जंगल ही होगा। आज भी बहुत से वन क्षेत्रों में मनुष्य रहते हैं तथा वहां कुछ हिंसक पशुओं का आना-जाना भी लगा रहता है।

आक्षेप २. सीता के कहने पर राम हिरणों को पकड़ने गए और हिरन पर तीर चलाकर जान से मार डाला। -अरण्यकाण्ड २७/७-८

अब भला हिरण हिसंक कैसे हो सकता है?

उत्तर- हिरण हिंसक नहीं होते अपितु राक्षस हिंसक होते हैं। आपको तो आधा-अधूरा सन्दर्भ देने का रोग है। इस पूरे प्रसंग को हम संक्षेप में लिख देते हैं-

राम द्वारा खर आदि राक्षसों के वध के पश्चात् उसमें एक अकम्पन नाम का राक्षस किसी तरह जान बचाकर रावण के पास भाग आता है। उसी के सलाह से रावण सीता के अपहरण का निश्चय करता है। कुछ दूर स्थित एक आश्रम में जाकर वह ताटका-पुत्र मारीच से मिलता है। मारीच के कुशलता पूछने पर रावण उसे बताता है कि राम ने मेरे राज्य की सीमा के रक्षक खर-दूषण आदि राक्षसों को मार डाला है अतः मैं उसी का बदला लेने के लिए उसकी स्त्री का अपहरण करना चाहता हूं। लेकिन मारीच के सावधान करने पर वह लंका वापस लौट जाता है। उधर शूर्पणखा देखती है कि श्रीराम ने अकेले ही हजारों राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया है। तभी शूर्पणखा रावण को लक्ष्मण द्वारा अपने नाक-काटने का वृतान्त सुनाती है और वह रावण को श्रीराम से बदला लेने के लिए कहती है। वह रावण को राम, लक्ष्मण तथा सीता का परिचय देते हुए सीता को भार्या बनाने के लिए प्रेरित करती है। अब रावण पुनः मारीच के पास जाता है और उससे सीता के अपहरण के लिए सहायता मांगता है। रावण कहता है, मेरा भाई खर, महाबाहु दूषण, मेरी बहिन शूर्पणखा, मांसभोजी राक्षस महाबाहु त्रिशिरा आदि राक्षसों को राम ने मौत के घाट उतार दिया। उससे बदला लेने के लिए मैं भी उसकी देवकन्या के समान सुन्दरी पत्नी सीता को बलपूर्वक हर लाऊंगा। तुम उस कार्य में मेरी सहायता करो। तुम सोने के बने हुए मृग जैसा रूप धारण करके रजतमय बिन्दुओं से युक्त चितकबरे हो जाओ और राम के आश्रम में सीता के सामने विचरो। विचित्र मृग के रूप में तुम्हें देखकर सीता अवश्य ही अपने पति राम तथा लक्ष्मण से भी कहेगी कि आपलोग इसे पकड़ लावें। जब वे दोनों तुम्हें पकड़ने के लिए दूर निकल जाएंगे तो मैं बिना किसी विघ्न-बाधा के सीता को हर लूंगा। अब मारीच जाने के लिए तैयार हो जाता है। तथा मृग का रूप धारण करके राम के आश्रम पर विचरने लगता है। सीता उस मृग को देखकर राम से कहती है, आर्यपुत्र! यह मृग बड़ा ही सुन्दर है। इसने मेरे मन को हर लिया है। महाबाहो! इसे ले आइये। यह हम लोगों के मन-बहलाव के लिए रहेगा। -वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड सर्ग ३० श्लोक २७,२८, सर्ग ३१ श्लोक १,२,३१,३३,३६,३८,४०,४१,४६,५०, सर्ग ३२ श्लोक १,२५, सर्ग ३३, सर्ग ३४ श्लोक २५, सर्ग ३५, सर्ग ३६ श्लोक २,३,८,९,१३,१८, १९, २०, सर्ग ४२ श्लोक १,४,१४, सर्ग ४३ श्लोक १०, गीताप्रेस गो.

चूंकि लक्ष्मण को वह मृग देखकर पूर्व ही सन्देह हो जाता है। वह श्रीराम से कहते हैं- भैया! मैं तो समझता हूं कि इस मृग के रूप में वह मारीच नाम का राक्षस ही आया है। श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं, लक्ष्मण! तुम मुझसे जैसा कह रहे हो यदि वैसा ही यह मृग हो, यदि यह राक्षस की माया ही हो तो मुझे उसका वध करना चाहिए। वह मृग उछल-कूद करके श्रीराम को बहुत दूर ले जाता है। अंत में श्रीराम जी ने उसपर बाण छोड़ दिया और वह मृगरूपधारी मारीच मर गया। -वाल्मीकि रामायण, अरण्यद्र सर्ग ४३ श्लोक ५,३८, सर्ग ४४ श्लोक ४,५,१३,१४, १५,१६,१७,१८ गीताप्रेस गो.

टिप्पणी- शूर्पणखा जब रावण को अपने अपमान का वृतान्त सुनाती है तो रावण निश्चय करता है कि वह श्रीराम से बदला लेगा। उसने मारीच नाम के राक्षस को सुनहरे हिरण के रूप में भेजा। स्वर्णरूप हिरण देखकर सीता का मन ललचाया। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गईं और रामचन्द्र को उसके पकड़ने के लिए प्रार्थना की। उसके हठ के कारण पहले राम पुनः लक्ष्मण दोनों गए और जब पकड़ा तो ज्ञात हुआ कि वह छल था, वास्तविक हिरण न था। मारीच नाम का एक दैत्य या असभ्य जंगली मनुष्य हिरण का स्वांग धारण कर व खाल ओढ़कर भरमाने आया था। जिसके पीछे रावण सीता को भगा ले जाने में सफल हो पाया।

नोट- राक्षस शब्द संस्कृत का है। वैदिक में इसका अर्थ- सहनशक्ति से रहित, हठी, क्रोध से मारने वाला, कठोर भोजन में रुचि रखने वाला, मांस प्रेमी, सोने के लिए श्रमशील, ईषालु को राक्षस कहते हैं।

अब मुल्ला जी बतायें कि श्रीराम जी ने हिरण को मारा या राक्षस को? राक्षस हिंसक था या हिरण?

प्रश्न- इस बात का और क्या प्रमाण है कि वह हिरण

क्रमशः.....७ पर

क्या हनुमान आदि वानर बन्दर थे?

डा० विवेक आर्य

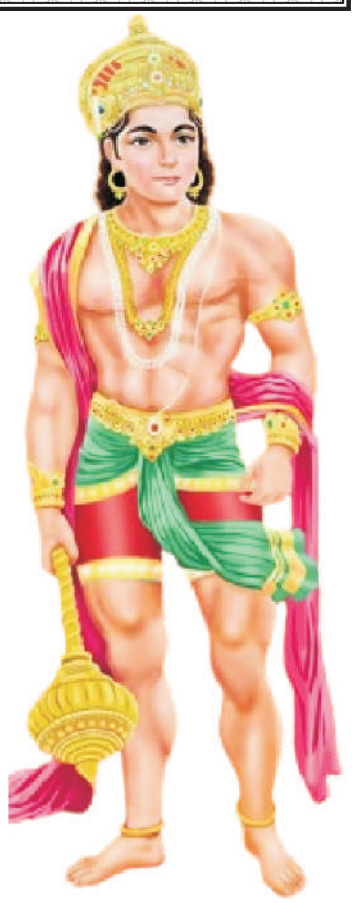

(हनुमान जयंती की हार्दिक शुभकामनायें)!

वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोतम श्री राम चन्द्र जी महाराज के पश्चात् परम बलशाली वीर शिरोमणि हनुमान जी का नाम स्मरण किया जाता है। हनुमान जी का जब हम चित्र देखते हैं तो उसमें उन्हें एक बन्दर के रूप में चित्रित किया गया है जिनके पूंछ भी लगी हुई है।इस चित्र को देखकर हमारे मन में अनेक प्रश्न भी उठते हैं जैसे-

क्या हनुमान जी वास्तव में बन्दर थे? क्या वाकई में उनके पूंछ लगी हुई थी ?

इस प्रश्न का उत्तर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि अज्ञानी लोग वीर हनुमान का नाम लेकर परिहास करने का असफल प्रयास करते रहते है। आईये इन प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त करते है।

१. प्रथम "वानर" शब्द पर विचार करते है। सामान्य रूप से हम "वानर" शब्द से यह अभिप्रेत कर लेते है कि वानर का अर्थ होता है "बन्दर" परन्तु अगर इस शब्द का विश्लेषण करे तो वानर शब्द का अर्थ होता है वन में उत्पन्न होने वाले अन्न को ग्रहण करने वाला। जैसे पर्वत अर्थात गिरि में रहने वाले और वहाँ का अन्न ग्रहण करने वाले को गिरिजन कहते है। उसी प्रकार वन में रहने वाले को वानर कहते है। वानर शब्द से किसी योनि विशेष, जाति, प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

२. सुग्रीव, बालि आदि का जो चित्र हम देखते है उसमें उनकी पूंछ लगी हुई दिखाई देती हैं। परन्तु उनकी स्त्रियों के कोई पूंछ नहीं होती? नर-मादा का ऐसा भेद संसार में किसी भी वर्ग में देखने को नहीं मिलता। इसलिए यह स्पष्ट होता हैं की हनुमान आदि के पूंछ होना केवल एक चित्रकार की कल्पना मात्र है।

३. किष्किन्धा कांड (३/२८-३२) में जब श्री रामचंद्र जी महाराज की पहली बार ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात रामचंद्र जी लक्ष्मण से बोले-

न अन् ऋग्वेद विनीतस्य न अ यजुर्वेद धारिणः।

न अ-साम वेद विदुषः शक्यम् एवम् विभाषितुम्।। ४/३/२८

अर्थात-

"ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं है तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है, वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होनें सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अभ्यास किया है, क्यूंकि इतने समय तक बोलने में इन्होनें किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न, शास्त्रीय पद्यति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी ह्रदय को हर्षित कर देती है"।

४.सुंदर कांड (३०/१८-२०) में जब हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले हनुमान जी सोचते है-

"यदि द्विजाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जाएगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुई यह सीता और भयभीत हो जाएगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर विशालाक्षी सीता कोलाहल आरंभ कर देगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूँगा।"

इस प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं की हनुमान जी चारों वेद, व्याकरण और संस्कृत सहित अनेक भाषाओं के ज्ञाता भी थे।

५. हनुमान जी के अतिरिक्त अन्य वानर जैसे की बालि पुत्र अंगद का भी वर्णन वाल्मीकि रामायण में संसार के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में किष्किन्धा कांड ५४/२ में हुआ है। हनुमान बालि पुत्र अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे।

बुद्धि के यह आठ अंग हैं- सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, विज्ञान व तत्वज्ञान।

चार प्रकार के बल हैं- साम , दाम, दंड और भेद।

राजनीति के चौदह गुण हैं- देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्टसहिष्णुता, सर्वविज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता।

भला इतने गुणों से सुशोभित अंगद बन्दर कहाँ से हो सकते है?

६. एक शंका हमारे समक्ष आती है कि क्या हनुमान जी उड़ कर अपनी पुंछ की सहायता से समुद्र पार कर लंका में गये थे?

हनुमान जी के विषय में यह भ्रान्ति अनेक बार सामने आती है कि वह उड़ कर समुद्र कैसे पार कर गए ? क्यूंकि मनुष्य द्वारा उड़ना संभव नहीं है? सत्य यह है कि हनुमान जी ने उड़ कर नहीं अपितु तैर कर समुद्र को पार किया था। रामायण में किष्किन्धा कांड के अंत में यह विवरण स्पष्ट रूप से दिया गया है। सम्पाती के वचन सुनकर अंगदादि सब वीर समुद्र के तट पर पहुँचे, तो समुद्र के वेग और बल को देखकर सबके मन खिन्न हो गये। अंगद ने सौ योजन के समुद्र को पार करने का आवाहन किया। युवराज अंगद के सन्देश को सुनकर वानरों ने १०० योजन के समुद्र को पार करने में असमर्थता दिखाई। तब अंगद ने कहा कि मैं १०० योजन तैरने में समर्थ हूँ। पर वापिस आने कि मुझमे शक्ति नहीं है। तब जाम्बवान ने कहा आप हमारे स्वामी है आपको हम जाने नहीं देंगे। इस पर अंगद ने कहा यदि मैं न जाऊँ और न कोई और पुरुष जाये,तो फिर हम सबको मर जाना ही अच्छा है। क्यूंकि कार्य किये बिना, सुग्रीव के राज्य में जाना भी मरना ही है।

अंगद के इस साहस भरे वाक्य को सुनकर जाम्बवान बोले-राजन मैं अभी उस वीर को प्रेरणा देता हूँ, जो इस कार्य को सिद्ध करने में सक्षम है। इसके पश्चात हनुमान को उनकी शक्तियों का स्मरण करा प्रेरित किया गया। हनुमान जी बोले-"मैं इस सारे समुद्र को बाहुबल से तर सकता हूँ और मेरे ऊरु, जंघा के वेग से उठा हुआ समुद्र जल आकाश को चढ़ते हुए के तुल्य होगा। मैं पार जाकर उधर की पृथ्वी पर पाँव धरे बिना, अर्थात विश्राम करे बिना फिर उसी वेग से इस ओर आ सकता हूँ। मैं जब समुद्र में जाऊँगा, अवश्य खिन्न हुए लता, वृक्ष आकाश को उड़ेंगे, अर्थात अन्य स्थान का आश्रय ढूंढेंगे।" (श्लोक किष्किन्धा काण्ड ६७/२६)

इसके पश्चात हनुमान समुद्र में उतरने के लिए एक पर्वत के शिखर पर चढ़ गये। उनके वेग से उस समय प्रतीत होता था कि पर्वत काँप रहा है। हनुमान जी के समुद्र में प्रविष्ट होते ही समुद्र में ऐसा शब्द हुआ जैसे कि मेघ गर्जन से होता है। और हनुमान जी ने वेग से उस महासमुद्र को देखते ही देखते पार कर लिया।

हिंदी भाषा में एक प्रसिद्द मुहावरा है" हवा से बातें करना" अर्थात अत्यंत वेग से जो चलता या तैरता या गति करता है, उसे हवा से बातें करना कहते है। हनुमान जी ने इतने वेग से समुद्र को पार किया कि उपमा में हवा से बातें करना परिवर्तित होकर हवा में उड़ना हो गया। इसी से यह भ्रान्ति हुई कि हनुमान जी हवा में उड़ते थे। जबकि सत्य यह है कि वह ब्रह्मचर्य के बल पर हवा के समान तेज गति से कार्य करते थे।

अशोक वाटिका में पकड़े जाने पर जब हनुमान जी को रावण के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उनका उपहास करने की मंशा से रावण के सैनिकों ने उन्हें जंगली जानवर जैसा दिखाने के लिए पुंछ लगाकर उपहास करने का स्वांग किया। मूर्खों से इससे अधिक कुछ अपेक्षित भी नहीं हैं। हनुमान जी ने भी इस उपहास का समुचित प्रतिउत्तर दिया। उसी आग लगी पुंछ से पूरी लंका को भस्म कर रावण को पाठ सिखाया।

७. अंगद की माता तारा के विषय में मरते समय किष्किन्धा कांड १६/१२ में बालि ने कहा था कि-

"सुषेन की पुत्री यह तारा सूक्षम विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सर्वथा निपुण है। जिस कार्य को यह अच्छा बताए, उसे निःसंग होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।"

ऐसे गुण विशेष मनुष्यों में ही संभव है।

८. किष्किन्धा कांड (२५/३०) में बालि के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी - मेरे ज्येष्ठ बन्धु आर्य का संस्कार राजकीय नियन के अनुसार शास्त्र अनुकूल किया जाये। किष्किन्धा कांड (२६/१०) में सुग्रीव का राजतिलक हवन और मन्त्रादि के साथ विद्वानों ने किया।

क्या बंदरों में शास्त्रीय विधि से संस्कार होता हैं?

९ . जहाँ तक जटायु का प्रश्न है, वह गिद्ध नामक पक्षी नहीं था। जिस समय रावण सीता का अपहरण कर उसे ले जा रहा था। तब जटायु को देख कर सीता ने कहाँ –

जटायो पश्य मम आर्य ह्रियमाणम् अनाथ वत्।

अनेन राक्षसेद्रेण करुणम् पाप कर्मणा।। अरण्यक ४९/३८

हे आर्य जटायु ! यह पापी राक्षस पति रावण मुझे अनाथ की भान्ति उठाये ले जा रहा है।

कथम् तत् चन्द्र संकाशम् मुखम् आसीत् मनोहरम्।

सीतया कानि च उक्तानि तस्मिन् काले द्विजोत्तम।। ६८/६

अर्थात -यहाँ जटायु को आर्य और द्विज कहा गया है। यह शब्द किसी पशु-पक्षी के सम्बोधन में नहीं कहे जाते।

रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा –

जटायुः नाम नाम्ना अहम् गृध्र राजो महाबलः । अरण्यक ५०/४

अर्थात- मैं गृध कूट का भूतपूर्व राजा हूँ और मेरा नाम जटायु है।

यह भी निश्चित हैं की पशु-पक्षी किसी राज्य का राजा नहीं हो सकते। इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि जटायु पक्षी नहीं था, अपितु एक मनुष्य था। जो अपनी वृद्धावस्था में जंगल में वास कर रहा था।

१०. जहाँ तक जाम्बवान के रीछ होने का प्रश्न है। यह भी एक भ्रान्ति है। रामायण में वर्णन मिलता है कि जब युद्ध में राम-लक्ष्मण मेघनाद के ब्रहमास्त्र से घायल हो गए थे। तब किसी को भी उस संकट से बाहर निकलने का उपाय नहीं सूझ रहा था। तब विभीषण और हनुमान जाम्बवान के पास परामर्श लेने गये। तब जाम्बवान ने हनुमान को हिमालय जाकर ऋषभ नामक पर्वत और कैलाश नामक पर्वत से संजीवनी नामक औषधि लाने को कहा था।

इसका सन्दर्भ रामायण के युद्ध कांड सर्ग ७४/३१-३४ में मिलता है।

आप्त काल में बुद्धिमान और विद्वान जनों से संकट का हल पूछा जाता है। जैसे युद्धकाल में ऐसा निर्णय किसी अत्यंत बुद्धिवान और विचारवान व्यक्ति से पूछा जाता है। पशु-पक्षी आदि से ऐसे संकट काल में उपाय पूछना सर्वप्रथम तो संभव ही नहीं हैं। दूसरे बुद्धि से परे की बात है। इसलिए स्वीकार्य नहीं है।

इसलिए जाम्बवान का रीछ जैसा पशु नहीं अपितु महाविद्वान होना ही संभव है।

इन सब वर्णन और विवरणों को बुद्धिपूर्वक पढ़ने से यह सिद्ध होता है कि हनुमान, बालि, सुग्रीव आदि विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य थे। उन्हें बन्दर आदि मानना केवल मात्र एक कल्पना है और अपने श्रेष्ठ महापुरुषों के विषय में असत्य कथन है।

●●●

पृष्ठ.....५ का शेष.....

मारीच था? अन्य कोई हिरण भी हो सकता है।

उत्तर- मारीच श्रीराम के आश्रम पर विचरने के तैयार हो जाता है एवं मृगरूप धारण करता है, इसका प्रमाण हमने ऊपर ही दे दिया है। इसका और भी प्रमाण है कि वह हिरण मारीच ही था। देखो-

शरीर में काला मृगचर्म और सिरपर जटाओं का समूह धारण किये मारीच नामक राक्षस निवास करता था। -वाल्मीकि रामायण, अरण्य० ३५/३९, गीताप्रेस गो०

प्रश्न- आपने कहा राक्षस हिसंक होते हैं। मारीच भी हिंसक था, इसका प्रमाण दीजिये।

उत्तर- मारीच रावण से कहता है, मैं महान् बलशाली तो था ही, मेरी जीभ आग के समान उद्दीप्त हो रही थी। दाढ़ें भी बहुत बड़ी थीं, सींग तीखे थे और मैं महान् मृग के रूप में मांस खाता हुआ दण्डकारण्य में विचरने लगा। दण्डकारण्य के भीतर धर्मानुष्ठान में लगे हुए लोगों को मारकर उनका रक्त पीना और मांस खाना यही मेरा काम था। मैं ऋषियों का मांस खाता था। -वाल्मीकि रामायण, अरण्य० ३९६३,५,६, गीताप्रेस गो०

आक्षेप ३. राम और लक्ष्मण दोनों ने मिलकर ४ किस्म के महामृगों का तीर से प्रहार करके वध कर दिया। -वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, अयोध्याकाण्ड ५२/१०२

उत्तर- मृग का अर्थ हिरण ही नहीं अपितु जंगली जानवर भी है, यह बात किसी संस्कृत ज्ञाता से छिपी नहीं है। उन्होंने जंगली सुअर आदि हिंसक जानवर ही मारे, निर्दोष प्राणियों को नहीं। वहां वराह आदि स्पष्ट लिखा है। देखिए-

तौ तत्र हत्वा चतुरो महामृगान्
वराहमृश्यं पृषतं महारुरुम्।
आदाय मेध्यं त्वरितं बुभुक्षितौ
वासाय काले ययतुर्वनस्पतिम्।।

अर्थ- वहां उन दोनों भाइयों ने मृगया-विनोद के लिये वराह, ऋश्य, पृषत् और महारुरु- इन चार महामृगों पर बाणों का प्रहार किया। तत्पश्चात् जब उन्हें भूख लगी, तब पवित्र कन्द-मूल आदि लेकर सायंकाल के समय ठहरने के लिए (वे सीताजी के साथ) एक वृक्ष के नीचे चले गए।

अब देखिए, मुल्लामण्डल में पशु-हत्या का आदेश-

(कुरबानी के) ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है। तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो। फिर जब उनके पहलू भूमि से आ लगें तो उनमें से स्वयं भी खाओ और संतोष से बैठनेवालों को भी खिलाओ और माँगनेवालों को भी। ऐसी ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ। -कुरान मजीद, सूरा अल-हज (२२), आयत ३६

आक्षेप ४. साधु के वेश में रावण को सीता ने कहा उनके स्वामी आते होंगे और जंगली सुअर को मारकर खाना लाते होंगे। -वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, अरण्यकाण्ड ४७/२३,२४

यहां भी राम का पशु-हत्या करना साबित हुआ।

उत्तर- पूरा सन्दर्भ दिया करें अन्यथा मांस-भक्षण का आरोप भी लग सकता है। उक्त सन्दर्भ का अर्थ इस प्रकार है-

गोह और जंगली सुअर आदि हिंसक पशुओं का वध करके तपस्वी जनों के उपभोग में आने योग्य बहुत-सा फल-मूल लेकर वे अभी आयेंगे।'' -श्लोक २३

पाठक ध्यान दें! जिन्हें मांसभक्षण विदित होता है वह यह वाक्य पढ़ें- 'तपस्वी जनों के उपभोग में आने योग्य फल आदि लेकर वह आएंगे।' ठीक ऐसा ही इसके पूर्व श्लोक में भी कहा है- 'अभी मेरे स्वामी प्रचुर मात्रा में जंगली फल-मूल लेकर आते होंगे।' -श्लोक २२, अस्तु!

जंगली सुअर हिंसक होते हैं, यह सर्वविदित है। प्रजा आदि रक्षा हेतु उन्हें मारना हिंसा नहीं, इसपर हम पूर्व भी लिख आये हैं। यहां भी कहीं हिंसा करना नहीं लिखा।

लेकिन मुल्लामण्डल का यह हदीस दर्शनीय है-

१. जिसका गोश्त खाया जाय उसका पेशाब ''पाक'' है। -''मिश्कात'' जिल्द १ हदीस नम्बर ४७१

२. एक कुएं में हैज (महावारी) के चिथड़े (कपड़े) और मरे हुए कुत्ते डाले जाते थे लोगों में उसकी पानी की बाबत पूछा?, हजरत ने कहा ''पाक'' है। -''मिश्कात'' जिल्द १ हदीस नम्बर ४३८

पाठकगण, देख सकते हैं कि इस्लाम की शिक्षायें कितनी उच्च और पवित्र विचार की हैं?

आक्षेप ५. राम के सेना में निषाद लोगों को मुर्गा और मांस खाने को दिया गया। -वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस ९१/७०

उत्तर- १. इस सर्ग में राम के सेना नहीं अपितु भरत के सेना का वर्णन है। वाल्मीकी रामायण, आयोध्याकाण्ड सर्ग ९१ श्लोक ५ एवं १० (गीताप्रेस गोद्ग) मेरे कथन की पुष्टि करता है।

२. आपने जो श्लोक दिया है, वह श्लोक रामायण का भाग नहीं अथवा इस कारण से प्रक्षिप्त है-

मुनिराज के चारों ओर पालतु मृग, पक्षी और मुनि लोग बैठे थे। सबके साथ रामचन्द्र जी की पूजा कर भरद्वाज जी धर्मयुक्त वचन रामचन्द्र से बोले। (अयो० ५४/१९,२०)

इस आधार पर मांस आदि मनगढ़ंत बातें विश्वासनीय नहीं हैं। पुनरपि यहां भरत और रामचन्द्र के मांस खाने का उल्लेख नहीं। अतः हम तो इन महात्माओं की जीवनी बतलाते हैं अन्य सेवाकारों की नहीं।

आक्षेप ६. पुत्र प्राप्ति हेतु अश्वमेध यज्ञ में राजा दशरथ ने कई पशुओं की बलि दी थी। वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, बालकाण्ड सर्ग १४

शतपथ ब्राह्मण में भी पशु-हत्या का वर्णन है तथा घोड़े के साथ रातभर औरत के चादर चढ़ाकर सम्भोग करने का भी विधान है। -शतपथ ब्राह्मण १३/५/२/१,२ जैसा कि राम की मां कौशल्या ने रात्रि घोड़े के साथ बितायी थी। -बालकाण्ड १४/३४

वैदिक कोष पेज २९ के अनुसार अश्वमेध यज्ञ में ३०० पशुओं के हत्या का वर्णन है।

उत्तर- पहली बात तो यहां कहीं पशुओं की बलि देने का वर्णन नहीं है। दूसरी बात यह है कि दशरथ को पुत्र चाहिए था तो अश्वमेध यज्ञ करना ही यहां मिलावट है क्योंकि अश्वमेध यज्ञ पुत्र के लिये नहीं होता। रामचरितमानस, पद्मपुराण, भागवतपुराण आदि जहां भी रामकथा है- वहां केवल 'पुत्रेष्टि यज्ञ' है अश्वमेध यज्ञ का वर्णन वहां नहीं है। और न ही अश्वमेध यज्ञ की जरूरत वहां पर है। यह किसी वाममार्गी का प्रक्षेप है।

शतपथब्राह्मण में यह प्रक्षेप है। हां, मगर वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, बालकाण्ड सर्ग १४ में 'हस्तेम समयोजयन्' लिखा है अर्थात् हाथ से अश्व को छुआ। किन्तु चौधरी द्वारिकालाल नामक वामपंथी ने 'हयेन समयोजन्' कर दिया, यानी घोड़े से संभोग कर दिया। घोड़े के साथ कौशल्या का रात बिताना अश्वमेध यज्ञ के वृतान्त के अंतर्गत आता है। हमने इसे पहले ही प्रक्षिप्त सिद्ध कर दिया है। यदि मात्र आपके अनुसार यह सत्य भी है तो वहां कोई भी चादर चढ़ाकर संभोग करना नहीं लिखा।

आपका वैदिक कोष से प्रमाण भी गलत है। पेज २९ पर अश्वमेध के बारे में कोई वर्णन नहीं है। अब मुल्ला जी तो हैं अनपढ़! मेध शब्द के तीन अर्थ होते हैं- १. मेध अथवा शुद्धि-बुद्धि को बढ़ाना। २. लोगों में एकता अथवा प्रेम को बढ़ाना। ३. हिंसा।

इस हेतु मेध शब्द से केवल हिंसा शब्द का ग्रहण करना उचित नहीं है। यज्ञ को ''अध्वर अर्थात् हिंसा रहित'' कहा गया है।

अब मुल्लामण्डल पर दृष्टि करते हैं-

१. हजरत ने अहले अर्ना को ऊंट का पेशाब पीने का हुक्म दिया। -शरह बकाया सफा ३२

२. गुदा मैथुन के बारे में लिखने योग्य नहीं है। इस हेतु प्रमाण मात्र दे रहा हूँ-

- शरह बकाया (उर्दू)- (सफा ३२, सतर १०)
- शरह बकाया (उर्दू)- (सफा १८२, सतर ५ व ६)
- हाशिये चलपी- (सफा १६४, अरबी)
- शरह बकाया- (सफा ३०८, का फुटनोट)
- गायतुल औतार- (जिल्द १, सफा ७२, सतर १३)
- गायतुल औतार- (जिल्द २, सफा ४१०, सतर ५)
- हफवातुल मुसलमीन- (सफा ४२, सतर ५ से ४६ तक)

अभी अनेकों प्रमाण है लेकिन विस्तारभय से उसे नहीं लिखा जा रहा है।

आक्षेप ७. हिसंक और अहिंसक दोनों प्रकार के पशुओं को मारने का आदेश दयानंदकृत यजुर्वेदभाष्य १०/८६/१४ में मिलता है।

उत्तर- आपने तो झूठ बोलने का नमक खाया है। जब यजुर्वेद में केवल अध्याय और मन्त्र हैं तो आपने यह तीसरा क्या दिया है? आप अपने अज्ञात सन्दर्भ को ठीक करें। जब पता ही गलत है तो खण्डन क्या करना?

आक्षेप ८. रामायण के अनुसार राम इन्द्र के तुल्य हैं। ऋग्वेद सायणभाष्य १०/८६/१४ के अनुसार इन्द्र १५ से २० सांड और बैल पका खा-खाकर मोटा होता है।

उत्तर- सायण का भाष्य मान्य नहीं है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। कारण सायण अपने वेदभाष्य भूमिका में 'तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऋचः सामानि...', 'शास्त्रयोनित्वात्' तथा 'अत एव च नित्यवम्' जैसे वाक्यों को उद्धृत करके वेदों को नित्य एवं अपौरुषेय ज्ञान स्वीकार किया है लेकिन ऐसा लिखकर भी सायण अपने वेदभाष्य में रामायण, महाभारतकालीन तथा पौराणिक पात्रों जैसे वशिष्ठ, गौतम, उर्वशी, दिवोदास, कण्व, इन्द्रादि नामों को उद्धृत करके काल्पनिक कथाओं का सृजन करते हैं। रावण, उव्वट, सायण और महीधर एक ही थाली के चट्ट-बट्टे हैं। आइये, उपरोक्त मन्त्र का सही अर्थ करें-

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं
पचन्ति विंशतिम्।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी
पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र
उत्तरः।। -ऋ० १०/८६/१४

पदार्थः- (पंचदश) दश प्राण और पांचभूत ये पन्द्रह पदार्थ, (मे) मेरे द्वारा बनाये गये (उक्ष्णः) सुखों के वर्षक शरीरों को (विंशतिम्) २० अंगों को (सांकम् हि) साथ ही (पचन्ति) पका कर पुष्ट करते हैं (उत) और (मे) मेरे द्वारा प्रदत्त शरीर के (उभाकुक्षी) दोनों पार्श्वों को (पृणन्ति) पूर्ण करते हैं। (अहम्) मैं (पीव इत्) सर्वदा परिपुष्ट इस सबको प्रलयकाल में (अदिम्) अपने अन्दर समा लेता हूं, (इन्द्रः) परमैश्वर्यवान् प्रभु (विश्वस्मात्) सब पदार्थों से सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

भावार्थः- दश प्राण और पंचभूत मुक्त परमेश्वर द्वारा बनाये गए शरीरों के बीस अङ्गों को साथ ही परिपक्व करके पुष्ट करते हैं और मेरे द्वारा प्रदत्त दोनों पार्श्वों को भी परिपूर्ण करते हैं। मैं सर्वदा परिपुष्ट इन्द्र=परमेश्वर इन सबको प्रलयकाल में अपने अन्दर समेट लेता हूं। परमैश्वर्यवान् प्रभु सब पदार्थों से सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

हम बड़े ही सौभाग्यशाली हैं कि हम ऐसे आदर्श, सच्चरित्र, आर्यश्रेष्ठ श्रीरामजी के वंशज हैं। आइये, श्रीरामचन्द्र जी के प्रत्येक गुणों को अपनायें एवं हिंसा त्यागकर वेदों में वर्णित अहिंसा के संदेश पर चलें।

।। मर्यादा पुरुषोत्तम
श्रीरामचन्द्र की जय।।

●●●

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र आर्यमित्र १८ एवं २५ अप्रैल २०२४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६४१५३६५५७६, सम्पादक-६४५१८८१६७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

तपस्वी शिक्षाविद महात्मा हंसराज

-डॉ. विवेक आर्य

भारत के शैक्षिक जगत में डी.ए.वी. विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से धन्य हुए ग्राम बैजवाड़ा (जिला होशियारपुर, पंजाब) में १९ अप्रैल, १८६४ को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था, पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। इससे ये बहुत दुःखी रहते थे।

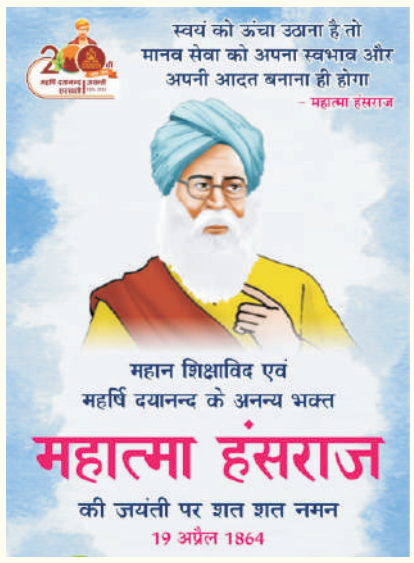

महर्षि दयानन्द सरस्वती के देहावसान के बाद लाहौर के आर्यभक्त उनकी स्मृति में कुछ काम करना चाहते थे, तो अंग्रेजी के साथ-साथ अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने वाले विद्यालय खोलने की चर्चा चली। २२ वर्षीय हंसराज जी ने एक साहसिक निर्णय लेकर इस कार्य हेतु अपनी सेवाएँ निःशुल्क समर्पित कर दीं। इस व्रत को उन्होंने आजीवन निभाया।

हंसराज जी के समर्पण को देखकर उनके बड़े भाई मुलकराज जी ने उन्हें ४० रु० प्रतिमाह देने का वचन दिया। अगले २५ साल हंसराज जी डी.ए.वी. स्कूल एवं कॉलेज, लाहौर के अवैतनिक प्राचार्य रहे।

उन्होंने जीवन भर कोई पैसा नहीं कमाया। कोई भूमि उन्होंने अपने लिए नहीं खरीदी, तो मकान बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। पैतृक सम्पत्ति के रूप में जो मकान मिला था, धन के अभाव में उसकी वे कभी मरम्मत भी नहीं करा सके।

उनके इस समर्पण को देखकर यदि कोई व्यक्ति उन्हें कुछ नकद राशि या वस्तु भेंट करता, तो वे उसे विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर देते थे। संस्था के कार्य से यदि वे कहीं बाहर जाते, तो वहाँ केवल भोजन करते थे। शेष व्यय वे अपनी जेब से करते थे। इस प्रकार मात्र ४० रु० में उन्होंने अपनी माता, पत्नी, दो पुत्र और तीन पुत्रियों के परिवार का खर्च चलाया। आगे चलकर उनके पुत्र बलराज ने उन्हें सहायता देने का क्रम जारी रखा।

इतने कठिन परिश्रम और साधारण भोजन से उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक बार तो उन्हें क्षय रोग हो गया। लोगों ने उन्हें अंग्रेजी दवाएँ लेने की सलाह दी, पर उन्होंने आयुर्वेदिक दवाएँ ही लीं तथा उसी से वे ठीक हुए।

उन्होंने इस दौरान तीन माह तक केवल गुड़, जौ का सत्तू और पानी का ही सेवन किया। धनाभाव के कारण उनकी आँखों की रोशनी बहुत कम हो गयी। एक आँख तो फिर ठीक ही नहीं हुई, पर वे विद्यालयों के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। उनकी यह लगन देखकर लोगों ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी।

समाज सेवा में अपना जीवन समर्पित करने के बाद भी वे बहुत विनम्र थे। यदि उनसे मिलने कोई धर्मोपदेशक आता, तो वे खड़े होकर उसका स्वागत करते थे। वे सदा राजनीति से दूर रहे। उन्हें बस वेद-प्रचार की ही लगन थी।

उन्होंने लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल, डी.ए.वी. कॉलेज, दयानन्द ब्रह्म विद्यालय, आयुर्वेदिक कॉलेज, महिला महाविद्यालय, औद्योगिक स्कूल, आर्य समाज अनारकली एवं बच्छोवाली, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं हरिद्वार में वैदिक मोहन आश्रम की स्थापना की।

देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए १५ नवम्बर, १९३८ को महात्मा हंसराज जी ने अन्तिम साँस ली। उनके पढ़ाये छात्रों तथा अन्य प्रेमीजनों ने उनकी स्मृति में लाहौर, दिल्ली, अमृतसर, भटिंडा, मुम्बई, जालन्धर आदि में अनेक भवन एवं संस्थाएँ बनायीं, जो आज भी उस अखंड कर्मयोगी का स्मरण दिला रही हैं।

दर्शन योग धाम लाकरोड़ा, गुजरात का लोकार्पण आयोजन सम्पन्न

दर्शन योग धाम लाकरोड़ा, गुजरात वैदिक धर्म संस्कृति प्रचारार्थ विविध गतिविधियों के संचालन हेतु विस्तृत भूखण्ड पर विशाल भवन का लोकार्पण आयोजन दिनांक १५ से १७ तक आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासियों, विद्वानों व सम्पूर्ण भारत से आर्यजनों की उपस्थिति में आयोजित किया गया। समापन दिवस पर गुजरात राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रीमान् सुरेशचंद्र जी की गरिमामई उपस्थिति में नवनिर्मित भवन का लोकार्पण तथा गुरुकुल भवन का शिलान्यास सम्पन्न किया गया।

श्री राम की शिक्षाएँ

वाल्मीकि रामायण। सनातन धर्म के आदर्श श्रीराम का उज्ज्वल जीवन चरित्र जानने के लिए वाल्मीकि रामायण सर्वाधिक उपयोगी पुस्तक है। इसमें उत्तरकाण्ड नहीं है। केवल बालकाण्ड से युद्धकाण्ड तक ६ काण्ड हैं।

श्रीराम द्वारा दी गई शिक्षाएं-

निर्मर्यादस्तु पुरुषः पापाचारसमन्वितः।
मानं न लभते सत्सु भिन्नचारित्रदर्शनः।।

जो मनुष्य मर्यादारहित, पापचरण से युक्त और साधु-सम्मत शास्त्रों के विरुद्ध आचरण करनेवाला है वह सज्जन पुरुषों में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता।

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाऽशुचिम्।।

कुलीन अथवा अकुलीन, वीर हैं अथवा भीरु, पवित्र हैं अथवा अपवित्र- इस बात का निर्णय चरित्र ही करता है।

यश्चौव देवाश्च सत्यमेंव हि मेनिरे।
सत्यवादी हि लोकेऽस्मिन परमं गच्छति क्षयम।।

ऋषि और विद्वान् लोग सत्य ही उत्कृष्ट मानते हैं, क्योंकि सत्यवादी पुरुष ही इस संसार में अक्षय (परान्तकाल तक), मोक्ष सुख को प्राप्त होते हैं।

उद्विजन्ते यथा सर्पान्नरादनृतवादिनः।
धर्मः सत्यं परो लोके मूलं स्वर्गस्य चोच्यते।।

मिथ्यावादी पुरुष से लोग वैसे ही डरते हैं, जैसे सर्प से। संसार में सत्य ही सबसे प्रधान धर्म माना गया है। स्वर्ग प्राप्ति का मूल साधन भी सत्य ही है।

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्यं पद्माश्रिता सदा।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।।

संसार में सत्य ही ईश्वर है। सत्य ही लक्ष्मी= धन-धान्य का निवास है। सत्य ही सुख-शान्ति एवं ऐश्वर्य का मूल है। संसार में सत्य से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है।

दत्तामिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तपांसि च।
वेदाः सत्यप्रतिष्ठानास्तस्मात्सत्यपरो भवेत्।।

दान, यज्ञ, हवन, तपश्चर्या द्वारा प्राप्त सारे तप और वेद- ये सब सत्य के आश्रय पर ही ठहरे हुए हैं, अतः सभी को सत्यपरायण होना चाहिए।

-अज्ञात

वैदिक नित्य कर्म विधि (अंग्रेजी)

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, सन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मन्त्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, भजन इत्यादि सम्मिलित है विशेष बात यह है कि सभी मंत्रों का उच्चारण अंग्रेजी में एवं उनके अर्थ भी अंग्रेजी में दिए गए है। सभी मन्त्र मोटे और लाल, तथा अंग्रेजी वाले सभी मन्त्र नीले रंग में अर्थ सहित मुद्रित है। 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 144 संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य एक प्रति 350/- रुपये डाक व्यय अलग होगा।

पुस्तक मंगाते हेतु हमारे निम्न खाते में राशि भेजकर फोन पर सूचित करें:

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या : 0127002100058167
IFSC Code : PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

मधुर प्रकाशन
दिल्ली-110006

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।